GFS

www.guideforschool.com

ICSE YEAR 2014

HINDI

(INDIAN LANGUAGE)

- **SOLUTION OF 2014**
- **COMMENTS OF COUNCIL EXAMINERS**
- **SUGGESTIONS FOR TEACHERS**

Dedicated to all my lovely students. May God help you always.

This small booklet contains solution of 2014 ICSE Hindi (Indian Language). The comments from the council examiners under solution of every question makes this a very handy guide for students to understand what the council expects as answer from the students.

I hope that the students will find this to be useful.

Md. Zeeshan Akhtar

23rd February, 2015

BLANK PAGE

HINDI

Question 1

Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any **one of** the following topics:- **[15]**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए–

(i) भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन करते हुए पाश्चात्य संस्कृति की कुछ अपनाने योग्य बातों पर प्रकाश डालिए।

(ii) आज खेलों में फैला भ्रष्टाचार एक नया ही रूप ले रहा है, विषय को स्पष्ट करते हुए, अपने प्रिय खेल का वर्णन कीजिए तथा जीवन में खेलों की आवश्यकता पर त्योहार हमें उमंग एवं उल्लास से भरकर अपनी संस्कृति से जोड़े रखते हैं। आज-कल लोगों में प्रकाश डालिए।

(iii) अपने जीवन में घटी एस घटना का वर्णन कीजिए जिसे याद करके, आप आज भी हँसे बिना नहीं रहते तथा इससे आपको क्या लाभ मिलता है।

(iv) एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका आधार हो–

'जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय'।

(v) नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ–</u>

(i) बहुत कम विद्यार्थियों ने यह विषय को चुना। उनमें से अधिकांश छात्रों को विषय समझने में कठिनाई हुई। पाश्चात्य संस्कृति की प्रशंसा तथा भारतीय संस्कृति को निम्न स्तर का दिखाया है। कहीं कहीं विद्यार्थियों ने भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन लिख दिया है। पाश्चात्य संस्कृति के नकारात्मक रूप को लिखा। पाश्चात्य संस्कृति की अपनाने योग्य बातें नहीं बता पाये। वहाँ के रहन सहन, खान पान तथा जीवन शैली का ही वर्णन किया। कहीं कहीं से संतोषजनक उत्तर भी प्राप्त हुए। छात्रों ने भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का नकारात्मक रूप से स्पष्टीकरण भी किया है। अधिकांश विद्यार्थियों के लिए यह विषय अस्पष्ट रहा। भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों की भी अधिकता थी तथा वत्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी अत्यधिक मात्रा में पायी गयी।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव–</u>

- निबन्ध के सभी विषयों को ध्यानपूर्वक पढ़ने का निर्देश दें।
- पाठ पढ़ाने के क्रम में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का परिचय दिया जाना चाहिए। इस प्रकार के विषय देकर कक्षा में अभ्यास कराना लाभप्रद रहेगा।
- निबन्ध के प्रत्येक पहलू समान रूप से महत्वपूर्ण हैं छात्रों को यह बताते हुए सामूहिक प्रश्नों वाले निबन्ध का अभ्यास कक्षा में करवाना चाहिए।
- छात्रों को भूमिका, विषय वर्णन तथा उपसंहार - निबन्ध के इन तीनों भागों का महत्व बताकर लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

(ii) इस विकल्प को अधिकतर विद्यार्थियों ने चुना तथा विषय से प्रभावित भी दिखे। क्रिकेट आज का सर्वाधिक प्रचलित खेल है अतः उसका वर्णन करने में छात्रों को कठिनाई नहीं हुई। खेलों में फैले भ्रष्टाचार पर छात्रों ने विस्तार से लिखा। या यों देखा गया कि छात्रों ने खेलों में भ्रटाचार का ही पूर्ण वर्णन किया। अधिकतर विद्यार्थियों ने खेल का नाम लिखकर छोड़ दिया। खेल का वर्णन नहीं किया जबकि वर्णन अपेक्षित था। जीवन में खेलों की आवश्सकता को बहुत कम छात्र लिख पाये। यह भी देखा गया कि भ्रष्टाचार पर इतना अधिक लिखा कि बाकी वर्णन का समय ही नहीं बचा। भाषा सम्बन्धी त्रुटियों की बहुलता रही।

(iii) इस विकल्प को बहुत सारे विद्यार्थियों ने चुना। अधिकांश छात्रों ने जीवन में घटी घटना का वर्णन किया पर हास्य का अभाव दिखा। कुछ छात्रों ने घटनाएँ विषयानुरूप नहीं लिखी। परन्तु बाद में लिखा कि वे घटना याद करके हँसते रहे। कहीं कहीं छात्रों ने हास्यप्रद घटना के स्थान पर दुर्घठना का वर्णन किया था सामान्य घटना तथा भयोत्पादक घटना लिखकर भी उसे हास्य का कारण बता दिया। अधिकांश छात्र विषय को समझने में असमर्थ रहे। अर्थात अधिकांश विद्यार्थियों के लिए “हँसी की घटना” को हास्यपूर्ण बनाना टेढ़ी खीर के समान था। हास्य से लाभ की चर्चा तो बहुत कम छात्रों ने की। प्रस्तुत विकल्प छात्रों के स्तर से थोड़ा कठिन प्रतीत हुआ।

(iv) प्रस्तुत विकल्प बहुत सारे विद्यार्थियों ने चुना। सर्वप्रथम तो उक्ति का अर्थ शायद किसी ने स्पष्ट किया। एक दो को छोड़कर अधिकतर छात्रों ने सीधे कहानी लिखा। मौलिक शब्द का अर्थ छात्र नहीं समझ पाए। मौलिकता का अर्थ पौराणिक मानकर विद्यार्थियों ने ‘ध्रुव’ तथा भक्त प्रहलाद या मीराबाई की कहानी लिखी। कहानी तो प्रायः स्पष्ट थी, घटनाएँ भी क्रमबद्ध लिखी गयी थी परन्तु मौलिकता का अभाव हर स्थान पर दिखायी दिया।

- हास्य, भय तथा कल्पना इत्यादि विषयों पर मौलिक घटना लेखन का अत्याधिक अभ्यास कराया जाये।
- हास्यपूर्ण, दुखद व रोचक घटनाओं जैसे विषयों में अन्तर स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- मुहावरों तथा उक्तियों का कक्षा में अभ्यास करवाना चाहिए। सामूहिक क्रिया के द्वारा भी इसे स्पष्ट किया जा सकता है।
- खेल इत्यादि विषयों पर भी कक्षा में चर्चा की जानी चाहिए। इससे खेल का ज्ञान भी बढ़ेगा और रूझान भी उत्पन्न होगी।
- कल्पनात्मक निबन्ध का भी कक्षा में निरन्तर अभ्यास करायें। छात्रों को विशेषण, तुलना, उपमा एवं मुहावरों का प्रयोग सिखायें।
- कहानी लेखन में प्रथम उक्ति का अर्थ तदुपरान्त मौलिकता का उचित अर्थ समझाते हुए कल्पना शक्ति की प्रबलता हेतु अभ्यास कराया जाए।
- विचारात्मक व तुलनात्मक अध्ययन वाले विषयों पर कक्षा में वाद-विवाद करवाकर भी निबन्ध लेखन का अभ्यास कराया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को समझाएँ कि निबन्ध का मुल्यांकन विषय के सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर किया जाता है अतः निबन्ध लिखते समय वे इसका विशेष ध्यान रखें।
- चित्र लेखन का अभ्यास भी कक्षा में करवाया जाना चाहिए। चित्र वर्णन की आवश्यकता छात्रों को विशेष रूप से बतायी जाये।
- विद्यार्थियों को यह अवश्य बताया जाना चाहिए कि चित्र वर्णन के लिए अलग से अंक निर्धारित होते हैं। इसी आधार पर लिखने का अभ्यास कराना चाहिए।
- श्रुतलेख द्वारा वर्त्तनी की अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों को कक्षा में बार-बार अभ्यास कराकर सुधार लाने का प्रयास करना करना चाहिए।

(v) इस विषय को बहुत कम विद्यार्थियों ने चुना। चित्र मुख्य रुप से जल के महत्व को दर्शा रहा है परन्तु छात्रों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार कुछ ने महिलाओं के उपर लिखा तो कुछ ने पानी की समस्या का वर्णन किया। कुछ छात्रों ने चुनाव तथा पानी को जोड़ दिया। संसार में जल का महत्व भी बताया। कुछ विद्याथियों ने इस चित्र को स्थितिवश स्त्रियों के श्रम से भी जोड़ दिया। जल प्रदुषण पर भी कुछ छात्रों ने लिखा तथा कई छात्रों ने गरीबी तथा पानी को जोड़ दिया। परन्तु किसी भी विद्यार्थी ने चित्र का वर्णन नहीं किया जबकि चित्र वर्णन के अंक निर्धारित होते हैं। अर्थात चित्र का वर्णन एवं विवरण करने में छात्र असमर्थ रहे।

- छात्रों की रचनात्मकता बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- मौलिक एवं रोचक कहानी लेखन तथा श्रवण के लिए सतत् प्रेरित किया जाना चाहिए।

अंक-योजना-

प्रश्न 1

मूल्यांकन करते समय निम्न बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया -

विषय की भूमिका, विषय-वर्णन (सम्बन्धित उदाहरण सूक्तियाँ भाषा-शैली अभिव्यक्ति-कौशल व विषय-विस्तार) एवं उपसंहार पर ध्यान दिया गया।

निबन्ध का आरम्भ व अन्त प्रभावपूर्ण होने पर मध्यभाग में अनुच्छेदों की सहायता से विचारों के क्रमश प्रस्तुतिकरण किए जाने पर विषय का अर्थ भली प्रकार स्पष्ट किए जाने पर तथा विषय का महत्व हानि-लाभ का यथोचित वर्णन किए जाने पर विद्यार्थियों को अति उत्तम अंक दिए गए हैं।

अशुद्ध वर्तनी अशुद्ध भाषा विषय से हटकर या अपनी इच्छानुसार विषय में परिवर्तन किए जाने पर अथवा विषय का अनावश्यक विस्तार किए जाने पर विद्यार्थियों के अंक काटे गए हैं।

Question 2

Write a letter in Hindi in approximately 120 words on any **one** of the topics given below:-

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिएः- **[7]**

(i) आप किसी स्थान विशेष की यात्रा करना चाहते हैं। उस स्थान की जानकारी प्राप्त करने के लिए, उस श्रेत्र के पर्यटन विभाग के अधिकारी को पत्र लिख कर पूछताछ कीजिए।

(ii) आपका भाई अपना अधिकांश समय मोबाइल फोन के उपयोग में बिताता है। मोबाइल फोन के अधिक उपयोग करने से होने वाली हानियों का उल्लेख करते हुए, उसे पत्र लिखिए।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ–

(i) अधिकांश विद्यार्थियों ने पत्र के प्रथम विषय का चयन किया। 'पर्यटन' शब्द का अर्थ नहीं समझ पाये इसलिए कई छात्रों ने अपने ही शहर की जानकारी के लिए पत्र लिखा। स्थान विशेष का वर्णन करने में छात्र असमर्थ रहे। कई विद्यार्थियों ने सिर्फ शहर का नाम लिखकर छोड़ दिया। पत्र के प्रारूप में कम गलतियाँ पाई गयी। अधिकांश छात्रों द्वारा पत्र के प्रारूप में अभिवादन की अवहेलना की। वर्त्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का बाहुल्य पाया गया। भाषा तथा व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों की भी अधिकता रही। स्थान विशेष की यात्रा में पूरी जानकारी नहीं ली गयी जिससे पत्र की अपूर्णता का आभास हुआ। पत्र में औपचारिक शब्दों का आभाव पाया गया। कुछ विद्यार्थी भवदीय के स्थान पर 'आपका भवदीय' या 'आपका आज्ञाकारी' भी लिखकर त्रुटियाँ करते रहे।

(ii) विद्यार्थियों ने पत्र के दूसरे विकल्प को भी महत्व दिया। कहीं कहीं विद्यार्थी पत्र के विषय को भली भाँति नहीं समझ पाए। अधिकांश विद्यार्थियो ने सम्बोधन के पश्चात् अभिवादन नहीं लिखा। पत्र में सविनय, निवेदन आदि शब्दों का अभाव पाया गया। कुछ छात्रों ने मोबाइल फोन से होने वाली हानि में मात्र परीक्षा या पढ़ाई पर पड़नेवाले प्रभाव का वर्णन किया। शारीरिक रूप से प्रभावित होने की कोई चर्चा नहीं थी जो अपेक्षित था। प्रारूप सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी बहुत अधिक थी। विषय स्पष्ट होने के बावजूद कुछ छात्रों ने बहन या मित्र का सम्बोधन देकर पत्र लिखा। अधिकांश छात्र विषय को लेकर स्पष्ट तो रहे परन्तु अन्य अशुद्धियाँ पायी गयी। तथापि उनका प्रयास सराहनीय रहा।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- पत्र के प्रारूप का विशेष महत्व होता है अतः इसका ध्यान दिलाते हुए पत्र लेखन का नियमित अभ्यास करवाना चाहिए।
- पत्र में अभिवादन, सम्बोधन आदि पर विशेष ध्यान दिलाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- प्रश्न में पत्र लेखन के निर्देश को ध्यानपूर्वक पढ़ने को कहा जाना चाहिए।
- कठिन शब्दों का शाब्दिक अर्थ कक्षा में स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- शब्द ज्ञान में वृद्धि के लिए नियमित रूप से नवीन शब्दों की सूची बनवाकर वाक्य प्रयोग द्वारा उनके अर्थ स्पष्ट करायें।
- औपचारिक पत्र का नियमित अभ्यास करवाया जाना चाहिए। प्रारूप में नये प्रारूप की जानकारी भी आवश्यक है।
- पत्र लिखवाने से पूर्व मौखिक चर्चा कर छात्रों की शंकाओं का समाधान किया जाना चाहिए।
- हिन्दी भाषा में रूचि जाग्रत कर वर्तनी और भाषा सुधार पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान बढ़ाने वाले विषयों को कक्षा में देकर पत्र लेखन का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
- शब्द विन्यास एवं वाक्य विन्यास की शुद्धि पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु छात्रों को प्रेरित किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को कुछ विभागों के नाम विशेष रूप से हिन्दी में बताया जाना चाहिए। यथाः– सिंचाई विभाग, विद्युत विभाग, परिवहन विभाग इत्यादि।
- औपचारिक पत्रों में औपचारिक शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता से विद्यार्थियों को अवगत करायें।
- वर्त्तनी सम्बन्धी त्रुटियों के सुधार हेतु कक्षा में समय समय पर श्रुतलेख दिया जाना चाहिए।

अंक-योजना-

प्रश्न 2

पत्र-लेखन में पत्र के प्रारूप-पत्र प्राप्तकर्त्ता के पद, गरिमा आदि के अनुसार उचित सम्बोधन तथा अभिवादन, दिनांक और मूल विषय पर विशेष महत्व दिया गया है। सरलता, स्पष्टता, और विषयानुरूप संक्षेप में की गई विचाराभिव्यक्ति एक अच्छे पत्र की पहचान है।

Question 3

Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible:-

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिएंः-

महान रसायनशास्त्री आचार्य नागार्जुन को अपनी प्रयोगशाला के लिए दो सहायकों की आवश्यकता थी। अनेक युवक उनके पास आये और निवेदन किया कि वे उन्हें अपने सहायक के रूप में नियुक्त कर लें। लेकिन परीक्षा लेने पर सभी प्रत्याशी आयोग्य साबित हुए। अंत में आचार्य निराश हो गए। उनकी निराशा का कारण यह था कि युवकों में रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो बहुत थे और अपने विषय से परिचित भी, लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो एक पवित्र ध्येय होता है, उसका सभी में अभाव था। प्रत्याशियों में से किसी को अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना था। पर आचार्य नागार्जुन को ऐसे सहायक की आवश्यकता नहीं थी। उनके मन और विचार में कुछ और ही था। निराश होकर उन्होंने सहायक की आवश्यकता होते हुए भी स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया।

कुछ दिन बाद ही दो युवक आचार्य के पास आये। उन्होंने उनसे निवेदन किया कि वे उन्हें अपना सहायक नियुक्त कर लें। आचार्य ने पहले तो उन्हें लौटा देना चाहा, लेकिन युवकों के अधिक आग्रह पर उन्होंने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। आचार्य ने दोनों युवकों को एक पदार्थ देकर लेकर अपने घर लौट गए।

दो दिन बाद एक युवक रसायन तैयार करके सुबह-सुबह ही उनके पास पहुँचा और रसायन का पात्र उन्हें देते हुए बोला “लीजिए आचार्य जी, रसायन तैयार है”। रसायन के पात्र की ओर बिना देखे ही आचार्य ने प्रश्न किया, “तो रसायन तैयार कर लिया तुमने?”

रसायन का पात्र एक ओर रखते हुए युवक ने कहा, “जी हाँ।” आचार्य ने दुसरा प्रश्न किया, “रसायन तैयार करते समय किसी भी प्रकार की कोई बाधा तो उपस्थित नहीं हुई?” युवक ने सकुचाते हुए उत्तर दिया, “बाधायें तो बहुत आई थी, लेकिन मैनें किसी भी बाधा की चितां किये बिना अपना कार्य चालू ही रखा तथा रसायन तैयार कर लिया। यदि मैं बाधाओं में उलझ गया होता, तो रसायन तैयार हो ही नहीं सकता था। एक ओर तो पिता के पेट में भयंकर शूल था, दूसरी ओर मेरी माता ज्वर से पीड़ित थी। ऊपर से मेरा छोटा भाई टांग तुड़वाकर पीड़ा से कराह रहा था। परन्तु ये बातें मुझे रसायन बनाने से विचलित नहीं कर सकीं।”

तभी दूसरा युवक खाली हाथ आकर वहाँ खड़ा हो गया। आचार्य जी ने उससे पूछा, “रसायन कहाँ है?” युवक ने झिझकते हुए उत्तर दिया, “आचार्यजी, मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं रसायन तैयार नहीं कर सका क्योंकि जाते समय मार्ग में एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था। वह एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। मेरा सारा समय उसकी सेवा में ही व्यतीत हो गया।”

आचार्य ने पहले युवक से कहा, "तुम जा सकते हो। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं। रसायनशास्त्री यदि पीड़ा से कराहते हुए व्यक्ति की उपेक्षा करे, तो वह अपने शास्त्र में अपूर्ण है।" दूसरे व्यक्ति को उन्होंने अपना सहायक नियुक्त कर लिया। भविष्य में वही युवक उनका दायाँ हाथ बना और उन्हें अति प्रिय लगने लगा।

(i) आचार्य को कैसे सहायकों की आवश्यकता थी और क्यों ? [2]

(ii) आचार्य की निराशा का क्या कारण था ? निराश होकर उन्होंने क्या किया ? [2]

(iii) आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने का क्या उपाय सोचा तथा क्यों ? [2]

(iv) दूसरा युवक रसायन क्यो तैयार नहीं कर सका ? इससे उसके चरित्र का कौन-सा गुण स्पष्ट होता है ? [2]

(v) आचार्य ने अपना सहायक किसे और क्यों चुना ? [2]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ-

(i) प्रश्न का प्रथम भाग स्पष्ट था अतः सभी छात्रों ने सही उत्तर लिखे। प्रश्न के द्वितीय भाग 'आचार्य को सहायकों की आवश्यकता क्यों थी ?' का उत्तर छात्र ठीक से नहीं लिख सके यानि सहायक की आवश्यकता का कारण स्पष्ट नहीं कर पाए जिससे पूरे अंक नहीं मिले।

(ii) इस प्रश्न का उत्तर प्राय सभी छात्रों ने सही लिखा। कुछ छात्रों ने प्रश्न के प्रथम और द्वितीय भाग का उत्तर स्पष्ट तौर पर नहीं लिखा। अधिकतर छात्रों ने अपनी भाषा में न लिखकर गद्यांश की ही भाषा का प्रयोग किया।

(iii) विद्यार्थियों ने प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर स्पष्ट लिखा। प्रश्न के द्वितीय भाग "आचार्य ने उपाय क्यों सोचा ?" अधिकांश छात्रों ने या तो इस प्रश्न का उत्तर लिखा ही नहीं या गलत लिखा। वे इस प्रश्न को लेकर भ्रमित रहे। वर्त्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी पायी गयी। उत्तर लिखते समय गद्यांश के भाव की ओर छात्रों का ध्यान नहीं गया।

(iv) प्रश्न का प्रथम भाग अत्यन्त सरल था । अतः सभी छात्रों ने इस भाग का सटीक और सार्थक उत्तर दिया। प्रश्न के दूसरे भाग में दूसरे भाग में दूसरे युवक के चारित्रिक गुण को स्पष्ट करने में अधिकतर छात्र पूर्णतः अक्षम रहे। सरल प्रश्नों के सरल उत्तर में भी विद्यार्थी अपनी भाषा का प्रयोग नहीं कर पाये।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- विद्यार्थियों को कम से कम दो बार अपठित गद्यांश को ध्यान से पढ़ने का निर्देश दिया जाना चाहिए। उसे समझकर उत्तर तैयार करने की दिशा में प्रेरित करना चाहिए।
- कक्षा में अपठित गद्यांश का अभ्यास करवाना चाहिए। गद्यांश में से ऐसे प्रश्न देने चाहिए जिनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिख सकें।
- छात्रों को अपनी भाषा में उत्तर लिखने का अभ्यास एवं भाषा की शुद्धियों पर ध्यान देने की आवश्यकता समझना चाहिए।
- उत्तर लिखते समय प्रश्न के दोनों भागों का उत्तर अलग-अलग अनुच्छेद में लिखा जाना चाहिए व मुख्य बिन्दुओं के समावेश की आवश्यकता छात्रों को समझाई जानी चाहिए।
- कक्षा में कहानियाँ सुनाकर उनसे मिलने वाली शिक्षा पर विचार विमर्श भी करना चाहिए।- 'श्रुत-भाव-ग्रहण' आदि के माध्यम से अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया को सरल व प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

(v) अधिकांश छात्रों ने प्रश्न के प्रथम भाग का सही उत्तर दिया। लेकिन आचार्य द्वारा दूसरे युवक को अपना सहायक क्यों चुना गया अधिकांश छात्र इसें स्पष्ट नहीं कर पाये। संभवतः ध्यान से गद्यांश न पढ़ने के कारण या लापरवाही के कारण ही उन्होंने ऐसा किया। छात्रों में वर्त्तनी सम्बन्धी ज्ञान का अभाव पाया गया।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- छात्रों की समझ के विकास के लिए विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक व तर्क परक प्रश्नों का अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- भाषा एवं वत्तनी सुधारने की दिशा में अधिक से अधिक छात्रों से अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
- भाषा ज्ञान पर विशेष ध्यान देकर निरंतर प्रयास करवाना आवश्यक है।

कक्षा में ऐसे अपठित गद्यांश का अभ्यास करवाना चाहिए जिसमें उत्तर अपने आप लिखने हों जिससे कि छात्रों को सोच समझकर उत्तर लिखने का अभ्यास हो।

- विचारात्मक प्रश्नों का निरंतर अभ्यास एवं नए-नए शब्दों का प्रयोग भी भाषा ज्ञान की वृद्धि के लिए सिखाया जाना चाहिए।

अंक योजना–

प्रश्न 3

(i) आचार्य को निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले सहायकों की आवश्यकता थी, क्योंकि उनकी प्रयोगशाला में काम बहुत अधिक था।

(ii) आचार्य की निराशा का यह कारण था कि उन्हें कोई निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाला योग्य सहायक नहीं मिल रहा था क्योंकि जो भी सहायक आता था उन में से किसी को वेतन की चिंता थी तो किसी को भविष्य की तो किसी को परिवार की चिंता थी। निराश होकर उन्होने स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया।

(iii) आचार्य के पास जो दो युवक आये थे, आचार्य ने उनको रसायन बनाने का कार्य देकर परीक्षा लेने का उपाय सोचा क्योंकि इसी के माध्यम से वह जान पाते कि पवित्र भावना से कार्य करने वाला व्यक्ति कौन है।

(iv) दूसरा युवक रसायन इसलिए नहीं तैयार कर सका क्योंकि आचार्य के घर से निकलते ही उसे मार्ग में सड़क दुर्घटना में घायल एक वृद्ध व्यक्ति मिला। वह युवक उसी की सेवा करने में लगा रहा, इसलिए उसे रसायन तैयार करने का समय ही नहीं मिल पाया।

ठस से उसके चरित्र का यह गुण स्पष्ट होता है कि वह निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाला परोपकारी युवक है।

(v) आचार्य ने अपना सहायक दूसरे युवक को नियुक्त किया, जो रसायन तैयार करने में असमर्थ रहा था क्योंकि आचार्य के पास ऐसे तो बहुत से युवक आये जिन में ज्ञान की कमी नहीं थी लेकिन एक रसायनशास्त्री के पास जो पवित्र ध्येय होता है, उसकी उनमें बहुत कमी थी, लेकिन दूसरे युवक के पास ज्ञान के साथ साथ परोपकारिता का गुण भी था और आचार्य उसके इसी गुण से सब से अधिक प्रभावित हुए थे।

Question 4

Answer the following according to the instructions given:-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :-

(i) निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए :-
रसायन, नुकसान। [1]

(ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :-
बाधा, पीड़ा। [1]

(iii) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए :-
अंत, पवित्र, निराशा, भविष्य। [1]

(iv) भाववाचक संज्ञा बनाइए :-
अतिथि, निपुण। [1]

(v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए :-
टका सा जवाब देना, सिक्का जमाना। [1]

(vi) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :-

(a) अंत में आचार्य निराश हो गए।
(आशा शब्द का प्रयोग कीजिये) [1]

(b) वह मुझे अति प्रिय लगने लगा।
(वाक्य को भविष्यत् काल में बदलिए) [1]

(c) उसका कार्य <u>प्रंशसा के योग्य</u> था।
(रेखांकित के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य पुनः लिखिये) [1]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ–

(i) कुछ विद्यार्थी विशेषण शब्द का अर्थ ही नहीं समझ पाये। फलस्वरूप दिए गये शब्दों के विशेषण बनाने में असमर्थ रहे। 'रसायन' शब्द का विशेषण बनाने में अधिकतर छात्र असमर्थ रहे। वर्त्तनी की अशुद्धियाँ भी बहुत पायी गई।

(ii) अधिकांश छात्रों ने पर्यायवाची शब्द ठीक लिखे। कुछ छात्रों ने एक शब्द के स्थान पर दोनों शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिख दिये। कुछ ने स्थानीय भाषा का प्रयोग भी किया। 'बाधा' का पर्यायवाची 'रूकावट' शब्द गलत लिखा। वर्त्तनी तथा मात्रा सम्बन्धी अशुद्धि पायी गयी।

(iii) इस प्रश्न मे सभी शब्द अत्यन्त सरल थे अतः अधिकांश छात्रों ने सही विलोम शब्द लिखे। 'अंत' के विपरीतार्थक शब्द में छात्र भ्रमित हो गये। विलोम शब्द लिखते समय 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा का भेद नहीं कर पाये।

(iv) प्रश्न अत्यन्त सरल था परन्तु भाववाचक संज्ञा में 'अतिथि' शब्द का सम्यक उत्तर देने में छात्र असमर्थ रहे। 'निपुण' का उत्तर सही लिखा। वत्तनी सम्बन्धी त्रुटि भी देखी गयी।

(v) अधिकांश छात्रों ने अर्थ लिखकर वाक्य बनाये। वाक्य विन्यास में विद्यार्थी असमर्थ रहे। अस्पष्ट वाक्य की संरचना की। बहुत सारे छात्रों ने दोनों मुहावरों से वाक्य बनाये। वर्त्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों की अहुलता के कारण वाक्य का सही होना भी व्यर्थ हो गया।

(vi) निर्देशानुसार परिवर्त्तन में छात्रों को कठिनाई का सामना करना पड़ा।

(a) अधिकतर विद्यार्थी 'आशा' को लेकर भ्रमित रहे। वाक्य परिवर्त्तन में 'नहीं' में अनुस्वार अधिकतर छात्रों ने नहीं दिया। प्रश्न पत्र में देखने के उपरान्त भी वर्त्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ पायी गयी।

(b) अधिकांश विद्यार्थियों ने इस वाक्य का सही उत्तर लिखा। कुछ छात्रों ने भविष्यकाल के स्थान पर भूतकाल का प्रयोग किया।

(c) छात्रों में अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द के ज्ञान का अभाव पाया गया। 'प्रशंसा के योग्य' के

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- विद्यार्थियों को कक्षा में लिखित एवं मौखिक रू‹ से विशेषण शब्दों का प्रचुर अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
- विशेषण बनाने की क्रिया सिखाते समय सही वर्त्तनी पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।
- छात्रों को र में 'उ' और 'ऊ' की मात्रा की ओर विशेष ध्यान दिलाना चाहिए।
- पर्यायवाची शब्दों के ज्ञान के लिए पाठ पढ़ाते समय भी समानार्थक शब्दों की जानकारी देनी चाहिए।
- ऐसे शब्द जो छात्र प्रायः गलत लिखते हैं उनको श्यामपट्ट पर लिखकर अभ्यास करवाना चाहिए जिससे अन्य छात्रों को भी लाभ हो।
- छात्रों को अधिक से अधिक विलोम शब्द याद करवाये जाएँ तथा इनका मौखिक एवं लिखित अभ्यास भी करवाया जाए।
- कक्षा में विलोम शब्द बताते समय इस बात पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दें कि जिस शब्द के लिए जो विलोम निश्चित है वही विलोम शब्द लिखा जाए।
- मुहावरों का प्रयोग का अधिक से अधिक अभ्यास करवाया जाना चाहिए। छात्रों को यह भी बताया जाए कि इसके प्रयोग से वाक्य सौन्दर्य में वृद्धि होती है।
- भाववाचक संज्ञा का विशेष अध्ययन आवश्यक है। विशेषण व भाववाचक दोनों का पृथक अभ्यास करवाना आवश्यक है।
- छात्रों के ज्ञान में वृद्धि के लिए लगातार प्रयत्न किया जाना चाहिए।
- वाक्य संरचना के समय शब्दों के अनुरूप प्रयोग का अभ्यास कराना

लिए सही एक शब्द लिखने में छात्र असमर्थ रहे। 'प्रशंसनीय' शब्द की वर्त्तनी में भी अशुद्धि पायी गई।

चाहिए। वर्त्तनी की अशुद्धियों की ओर छात्रों का ध्यान दिलाना चाहिए।

- व्याकरण के अनुसार भाषा में 'अनुस्वार' का विशेष महत्व है। इस ओर छात्रों का ध्यान दिलाना लाभकर होगा।
- निर्देशानुसार वाक्य परिवर्त्तन में निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ने का बार-बार निर्देश दिया जाना चाहिए।
- व्याकरण में वचन भी महत्वपूर्ण है। अतः एकवचन व बहुवचन को भी याद करवाना चाहिए।
- वाक्य परिवर्त्तन करवाते समय लिंग, वचन और काल की पूरी जानकारी देना अत्यन्त आवश्यक है। इनका भी कक्षा में अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
- सतत् प्रयास से मात्राओं की त्रुटि में सुधार आयेगा। अतः भाषा सम्बन्धी अभ्यास बार-बार करवाया जाना चाहिए।
- व्याकरण का अधिकाधिक, नियमित व लिखित अभ्यास छात्रों को अभ्यास कराएँ।

<u>अंक योजना-</u>

प्रश्न 4

(i) विशेषण बनाइए-

नुकसान - नुकसानदेह

रसायन - रसायनशास्त्री

(ii) पर्यायवाची (किसी एक शब्द के दो-दो) :-

बाधा - विघ्न, रूकावट, व्यवधान, अड़चन, रोड़ा

पीड़ा - कष्ट, व्यथा, वेदना, दुःख, संताप, शोक, क्लेश, दर्द, तकलीफ

(iii) विलोम शब्द (कोई दो) :-

अंत - आदि, आरम्भ

पवित्र - अपवित्र, मलिन, गंदा, मैला

निराशा - आशा

भविष्य - भूत

(iv) भाववाचक संज्ञा-

अतिथि - आतिथ्य

निपुण - निपुणता

(v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइये :-

टका सा जवाब देना - साफ इनकार देना - राज्य वापस माँगने पर दुर्योधन ने पाण्डवों को टका सा जवाब दे दिया।

सिक्का ज़माना - प्रभाव स्थपित करना - प्रत्येक राजनीतिक दल मतदाताओं पर अपना सिक्का ज़माना चाहते है।

(vi) कोष्टक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिये :-

(a) अंत में आचार्य को आशा नहीं रही।

(b) वह मुझे अति प्रिय लगने लगेगा।

(c) उसका कार्य प्रशंसनीय था।

गद्य संकलन

Question 5

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:-

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

"चाचाजी वहाँ भी गया था, पूरे दिन लाइन में खड़ा रहने पर जब मेरी बारी आई तो अफसर बोला - "भाई, नाम तो लिख लेता हूँ पर जल्दी नौकरी पाने की कोई आशा मत करना'' ।

-भीड़ में खोया आदमी-

लेखक-लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'

(i) वक्ता का परिचय देते हुए कि यहाँ चाचाजी का संबोधन किसके लिए किया गया है ? [2]

(ii) यहाँ किस कार्यालय की लाइन में खड़े होने की बात की जा रही है तथा क्यों ? [2]

(iii) यहाँ किस वक्ता की बातों से लेखक क्याा सोचने पर विवश हो जाता है तथा क्यों ? [3]

(iv) यह किस प्रकार का निबंध है तथा इस निबंध में देश की समस्या पर ध्यान आकर्शित किया गया है ? इससे देश को क्या नुकसान हो रहा है ? [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(i) अधिकांश विद्यार्थियों ने सही उत्तर लिखा परन्तु नाम के दिशा में प्राय: छात्र भ्रमित दिखाई दिए। 'श्यामलाकांत' के स्थान पर 'श्यामनाथ' तथा श्यामलाकांत नामों का प्रयोग हुआ। 'दीनानाथ' के स्थान पर भी अन्य नाम लिखे गये। कुछ विद्यार्थी वक्ता तथा चाचाजी के नाम को लेकर भ्रमित रहे।

(ii) अधिकांश छात्रों ने सही उत्तर लिखा। विद्यार्थियों ने रोजगार कार्यालय के स्थान पर अन्य-अन्य कार्यालयों का जिक्र किया । रोजगार कार्यालय के स्थान पर अधिकतर छात्रों ने सरकारी कार्यालय का प्रयोग किया । प्रश्न के दुसरे भाग क्यों का उत्तर उचित तथा सटीक था।

(iii) अधिकतर विद्यार्थी वक्ता की बातों से लेखक क्या सोचने पर विवश हो जाता है इसे तो बता पाए लेकिन क्यों का उत्तर देने मे असमर्थ रहे। कुछ छात्रों ने आगे पीछे का खूब लिखा परन्तु मुख्य बात छोटे शहरों का यह हाल है नही लिखा। इसलिए उत्तर अपूर्ण प्रतीत हुआ। कुछ छात्रों ने जनसंख्या वृद्धि के विषय में ही लिखा।

(iv) प्रश्न का प्रथम भाग 'किस प्रकार का निबन्ध है ' अधिकतर छात्र इसे स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। 'समस्या-मूलक' तथा 'जन चेतना' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया जो उत्तर को भी प्रभावी बनता तथा सही दिशा में ले जाता। इससे होने वाले नुकसान को भी विद्यार्थी पुर्ण रूप से स्पष्ट नहीं कर पाये। मात्र 'बेरोजगारी' चर्चा की। अन्य समस्याओं को अनदेखा कर दिया।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- छात्रों को पाठ समझा कर पढ़ाया जाना चाहिए। मुख्य बिन्दुओ की ओर विशेष ध्यान दिलाना चाहिए।
- कक्षा में पाठ पढ़ाते समय नाम विशेष तथा स्थान विशेष का अभ्यास बार-बार करवाया जाना चाहिए।
- इस प्रकार के विचारात्मक निबन्धों में आसपास की अन्य जानकारी भी आवश्यक है अतः देश की समस्याओं से छात्रों को विशेष रूप से अवगत कराना चाहिए।
- कहानी एवं निबंध का प्रकार स्पष्ट रूप से समझाया जाना चाहिए कि निबंध व्यंगात्मक है, विचारात्मक है, हास्यात्मक है या समस्या मूलक है।
- अध्यापक पाठ को बार-बार पढ़ने का निर्देश छात्रों को दें तथा साथ ही पाठ में छिपे हुए मूलभाव को पहचानने में उनकी सहायता करें।
- विद्यार्थियों को निर्देश दिया जाना चाहिए कि वे प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सोच विचार कर उत्तर लिखें।
- प्रश्न के सभी भागों का उत्तर अलग-अलग अनुच्छेद में लिखना सिखाया जाना चाहिए।
- पाठ के अन्त में पुनः पाठ का सार बताकर भिन्न-भिन्न प्रश्नों पर विचार विर्मश करना चाहिए ताकि छात्रों को किसी प्रकार की शंका न रहे।

अंक योजना–

प्रश्न 5

(i) कथन का वक्ता लेखक के अभिन्न मित्र बाबू श्यामलाकांत जी का बड़ा बेटा दीनानाथ है। यहाँ चाचाजी का संबोधन लेखक लीलाधर शर्मा पर्वतीय जी के लिए किया गया है।

(ii) यहाँ रोज़गार कार्यालय में नाम लिखवाने की लाइन में खड़े होने की बात की जा रही है। जहाँ 'श्यामालाकांत जी का बड़ा बेटा पूरे दिन लाइन में खड़ा रहा था क्योंकि उसे पढ़ाई पूरी किये दो वर्ष हो गए थे लेकिन अभी त कवह बेरोजगार घूम रहा था।

(iii) वक्ता दीनानाथ की बातें जब लेखक सुनता है कि उसे पढ़ाई पूरी किये दो वर्ष हो गए और अभी भी बेरोजगार घूम रहा है तथा रोज़गार दफ्तर में भी अफसर ने यह कह दिया है कि तुम्हारी योग्यता के हजारों व्यक्ति पहले ही इस कार्यालय में नाम दर्ज करा चुके हैं तो लेखक ये सोचने पर विवश हो जाता है कि जब छोटे से शहर का ये हाल है तो बड़े शहरों में बेरोजगारों की कितनी भीड़ भटक रही होगी।

क्योंकि लेखक के मित्र का बेटा छोटे से शहर हरिद्वार में रहता था और पढ़ा लिखा होने पर भी दो वर्षों से बेरोजगार घूम रहा था। साथ ही एक विचारवान पुरूष होने के नाते समस्या पर विचार करना उसके लिए स्वाभाविक था।

(iv) भीड़ में खोया आदमी एक समस्या मूलक तथा जन-चेतना को लक्षित करके लिखा गया निबंध है। इस निबंध में देश की ज्वलंत समस्या, दिनँादिन बढ़ती भीड़ पर हमारा ध्यान आकर्षित किया गया है। इससे हमारे देश को भारी नुकसान हो रहा है तथा देश उन्नति के स्थान पर अवनति की ओर जा रहा है। जैसे बेरोजगारी बढ रही है, आवास घट रहे हैं, खाद्यान्न घट रहे हैं, चिकित्सा सुविधाओं का अभाव हो रहा है, वातावरण दूषित हो रहा है, बीमारियाँ फैल रही हैं, अनुशासन पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है, सार्वजनिक स्थलों पर नियम और व्यवस्था का पालन नहीं हो रहा है तथा समय, शाक्ति और धन खर्च करके भी कार्य नहीं हो रहा है।

Question 6

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिएः-

जब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था, तब से वे इस स्कूल में शिक्षक का काम कर रहे हैं। वे तो स्थिर रहे हैं, परन्तु उनकी आयु उनकी तरह स्थिर नहीं रह सकी।

–मेरे मास्टर साहब–

लेखक–चंद्रगुप्त विद्यालंकार

(i) यहाँ किस के विषय में बात की जा रही है ? उसका लेखक के साथ क्या संबंध है ? [2]

(ii) मुख्याध्यापक के रूप में लेखक का विद्यालय में कैसा प्रभाव था ? [2]

(iii) मुख्याध्यापक बनने के बाद भी लेखक अपने प्रिय मास्टर साहब के साथ किन-किन बातों का ध्यान रखते थे ? लेखक की नियुक्ति का मास्टर साहब पर क्या प्रभाव पड़ा ? [3]

(iv) 'गुरू-शिष्य परम्परा' को वर्तमान समय ने किस प्रकार प्रभावित किया है ? 'गुरू-शिष्य परम्परा' के आदर्श रूप को बनाये रखने के लिए क्या उपाय किये जाने चाहिए ? [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ-

(i) अधिकांश छात्रों ने सही तथा संतोषजनक उत्तर लिखे। कुछ छात्र लेखक के साथ मास्टर साहब का सम्बन्ध स्पष्ट रूप से नहीं समझा पाये। संबंधो की उदारता की ओर विद्यार्थियों का ध्यान नहीं गया।

(ii) अधिकांश छात्रों ने लेखक का विद्यालय में प्रभाव स्पष्ट किया। गहराई से पाठ नहीं पढ़े जाने के कारण सभी प्रभावों को स्पष्ट करने में छात्र असमर्थ रहे। कुछ छात्रों ने विद्यालय भवन में हुए परिर्वतन को तो लिखा जैसे-सहन में फुलवारी इत्यादि परन्तु मास्टर साहब का प्रभाव स्पष्ट नहीं किया। वाक्य विन्यास में भी काफी त्रुटियाँ पायी गई फिर भी छात्रों का प्रयास सराहनीय रहा।

(iii) प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर अधिकतर विद्यार्थियों ने सही दिया। मास्टर साहब की बातों को पूरी तरह से स्पष्ट किया लेकिन लेखक के मुख्याध्याक के रूप में नियुक्ति का मास्टर पर क्या प्रभाव पड़ा। यह बताने में असमर्थ रहे। कुछ छात्रों ने तो प्रश्न के दूितीय भाग को छोड़ ही दिया। किसी किसी ने प्रश्न के प्रथम भाग में मात्र एक ही बात लिखी।

(iv) इस प्रश्न का उत्तर अधिकांश छात्रों ने स्पष्ट रूप से नहीं दिया। वर्तमान परिवेश में शिक्षा के व्यवसायीकरण वाले मुख्य बिन्दु का उत्तर में अभाव पाया गया। गुरू-शिष्य परम्परा के आदर्श रूप को वर्तमान समय में बनाये रखने के लिए किए जाने वाले उपायों का वर्णन छात्र नहीं कर पाये। कुछ छात्रों ने मास्टर साहब तथा विनायक वाला प्रसंग लिखा जो गलत है।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- विद्यार्थियों को बारम्बार पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसमें छिपे भाव को समझने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- कक्षा में छात्रों को यह विशेष निर्देश दिया जाना चाहिए कि वे प्रत्येक प्रश्न को बहुत ध्यान से पढ़ें तथा यह समझें कि किसके विषय में क्या प्रश्न पूछा जा रहा है।
- प्रश्न के मुख्य बिन्दु को विशेष रूप से स्पष्ट करने की जानकारी छात्रों को दी जानी चाहिए।
- पाठ में से वर्णनात्मक प्रश्नों का भी कक्षा में अभ्यास करवाना चाहिए।
- विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का सटीक उत्तर अपनी भाषा में लिखने के लिए लिखित अभ्यास की आवृति करवायी जानी चाहिए।
- पाठ में विशेष भाव तथा अर्थ रखने वाले शब्दों की विशेष व्याख्या करनी चाहिए।
- प्रश्न के दोनो भागों का उत्तर अलग-अलग स्पष्ट रूप से लिखना। विभिन्न उदाहरणों जैसे-एकलव्य, आरूणी के माध्यम से गुरू शिष्य परम्परा की ओर छात्रों का रूझान उत्पन्न करना चाहिए।

अंक योजना–

प्रश्न 6

(i) यहाँ लेखक के प्रिय मास्टर साहब के विषय में बात की जा रही है। उनका लेखक के साथ गुरू तथा शिष्य का सम्बन्ध है क्योंकि लेखक जब बहुत छोटे थे और विद्यालय जाना आरम्भ किया था तभी से वह शिक्षक के पद पर कार्य कर रहे थे और आज भी जब लेखक प्रधानाचार्य बनकर आये हैं तब भी वह उसी विद्यालय में शिक्षक के पद पर कार्य कर रहे हैं।

(ii) लेखक मुख्य अध्यापक बनकर उसी विद्यालय में आ गए थे जिससे वह बचपन में पढ़कर गए थे। मुख्य अध्यापक बनने के बाद लेखक का विद्यालय में बहुत प्रभाव था। विद्यालय के सभी विद्यार्थी लेखक की बात भी मानते थे तथा सम्मान भी करते थे, विद्यालय के सभी शिक्षक भी उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे एवं लेखक के कड़े अनुशासन से सभी बहुत प्रभावित रहते थे इसलिए सभी विद्यार्थी समय से विद्यालय आते थे, सभी की वेशभूषा सही होती थी, विद्यालय में शांति होती थी तथा सभी उस्ताद खड़े होकर पढ़ाते थे।

(iii) लेखक अध्यापक तो बन गए थे और भाग्य से उनके प्रिय मास्टर साहब भी उसी विद्यालय में थे लेकिन उनके प्रधानाचार्य बनने के बाद भी लेखक ने उनकी इज़्ज़त में कोई कमी नहीं रखी थी। जैसे कि लेखक अनुशासन प्रिय थे तो सभी जमात (कक्षा) के अध्यापक बच्चों को खड़े होकर ही पढ़ाते थे लेकिन मास्टर साहब बहुत बूढ़े हो गए थे इसलिए खड़े होकर नहीं पढ़ाते थे। लेखक भी ये बात जानते थे इसलिए कभी उनकी कक्षा में जाते ही नहीं थे। क्योंकि वह जानते थे कि उनके जाते ही मास्टर साहब खड़े हो जायेंगे। वह कक्षा में देर से जाते थे तब तक बच्चे शोर मचाते थे पर तब भी लेखक उन्हें कुछ नहीं कहते थे। जब कभी भी वह चपरासी से पूछकर डरते डरते लेखक के कमरे में आते थे तो उनका खड़े होकर स्वागत करते थे। उन को सम्मान पूर्वक पहले ही नमस्कार करते थे तथा उनसे हँस कर बातें करते थे। लेखक की नियुक्ति से मास्टर साहब थे।

(iv) गुरू तथा शिष्य के सम्बन्ध में पुरातन काल से लेकर अब तक बहुत परिवर्तन हुए है। एक समय वो भी था जब एकलव्य ने गुरू से बिना प्रश्न किये गुरू दक्षिणा में अपने गुरू द्रोणाचार्य को अपना अंगूठा काट कर दे दिया था तथा एक समय ये भी था कि लेखक ने अपने प्रिय मास्टर साहब को बच्चों के सामने ही डांट दिया था क्योंकि वो कक्षा में सो रहे थे, पर बाद में उन्हें बहुत अधिक प्श्चाताप भी हुआ कि उन्होंने इतना बड़ा अपराध कैसे का दिया? क्यों वह अपने क्रोध पर काबू नहीं कर सके और अपने इसी कार्य के पश्चाताप में उन्होंने अपने प्रिय मास्टर साहब से माफी मांगी तथा उनकी सिफारिश करके मुख्य अध्यापक बनाकर दूसरे विद्यालय में भे दिया जिस से फिर कभी ऐसी स्थिति ना आये।

लेकिन आज गुरू के प्रति सम्मान कम हो गया है। आज का विद्यार्थी केवल आँखों के सामने की इज्जत करता है। और कभी कभी तो उसकी सीमा भी पार कर जाता है तथा धृष्टता के साथ पलट कर जवाब भी दे देता है।

गुरू शिष्य परम्परा के आदर्श रूप को बनाये रखने के लिए शिक्षकों तथा विद्यार्थियों दोनों की ओर से प्रयास किया जाना चाहिए। अध्यापक को केवल धन लेकर ही अध्यापन को अपना ध्येय नहीं समझना चाहिए। विद्यार्थी से भावनात्मक सम्बन्ध भी बनाने चाहिए। विद्यार्थी को भी ज्ञान देने वाले शिक्षक का हृदय से सम्मान करना चाहिए।

Question 7

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिएः-

-यह माँ का झमेला ही रहेगा- उन्होंने फिर अंग्रेजी में अपनी स्त्री से कहा- कोई ढंग की बात हो तो, भी कोई कहे। अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गयी, चीफ को बुरा लगा, तो सारा मज़ा जाता रहेगा।

-चीफ की दावत-

लेखक-भीष्म साहनी

(i) वक्ता तथा श्रोता कौन है, वक्ता माँ को झमेला क्यों कह रहा है ? [2]

(ii) श्रोता किस बात को लेकर चिंतित है, क्या उसका चिंतित होना उचित है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [2]

(iii) चीफ कौन है ? उसको घर में बुलाने का क्या उदेश्य है ? उसके लिए क्या-क्या तैयारियाँ की जा रही हैं ? [3]

(iv) प्रस्तुत कहानी के आधार पर सामाजिक जीवन की मूल्यहीनता व समाज में फैले भ्रष्टाचार का वर्णन कीजिए। [3]

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ-</u>

(i) अधिकांश विद्यार्थी वक्ता तथा श्रोता में भ्रमित हो गए अतः उलटा भी लिख दिया। उपर दी गयी पंक्ति अधिकांश छात्रों के लिए कठिन रही। माँ को लेकर मात्र उनकी कुरूपता की चर्चा की गई। बाकी अन्य बिन्दुओं पर छात्रों ने कोई चर्चा नहीं की।

(ii) कुछ विद्यार्थियों ने अपने विवेक से सही उत्तर लिखा परन्तु कुछ ने प्रश्न के आधार पर कुछ बिन्दुओं को ही स्पष्ट किया जो पूर्णरूप से संतोषजनक नहीं था। तार्किक उत्तर देने में छात्र असफल रहे। अधिकतर छात्र श्रोता की चिन्ता का कारण स्पष्ट नहीं कर पाये।

(iii) अधिकतर छात्रों ने यथोचित उत्तर लिखा। प्रश्न अत्यंत सरल था। छात्रों को किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। कुछ विद्यार्थियों ने 'चीफ कौ है?' के उत्तर में दफ्तर का बड़ा बाबू या हेड जैसे शब्दों का प्रयोग किया। उद्देश्य लेखन में छात्रों का प्रयास सराहनीय रहा।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव-</u>

- संवादों के आधार पर वक्ता एवं श्रोता के विषय में बार-बार अभ्यास करवाना उचित होगा।
- छात्रों को तर्क शक्ति के आधार पर उत्तर देने का अधिकाधिक अभ्यास करवाना चाहिए।
- प्रश्न तथा प्रसंग को जोड़ते हुए उत्तर में जितने भी विकल्प आने हों सभी को लिखने का अभ्यास करवाना चाहिए ।
- पाठ के भाव का गहराई से अभ्यास करवाना चाहिए।
- छात्रों को वर्णनात्मक प्रश्नों का कक्षा में लिखित अभ्यास कराना एंव विषय पर चर्चा भी करनी चाहिए।

(iv) अधिकांश विद्यार्थियों ने केवल भ्रष्टाचार पर अपने विचार प्रस्तुत किए। कुछ छात्रों ने कहानी के आधार पर केवल उदाहरण ही दिया। प्रश्न को गहराई से न समझ पाने के कारण 'मूल्यहीनता' पर विचार प्रकट नहीं किया गया। भ्रष्टचार और मूल्यहीनता दोनों पर बहुत कम छात्रों ने लिखा।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- छात्रों में नैतिक मूल्यों को उत्पन्न करना तथा उनमें उच्च विचार भरना चाहिए जिससे स्वस्थ मानसिकता का विकास हो सके।
- छात्रों को इस बात के लिए बार-बार सजग करना चाहिए ताकि प्रश्न के सभी भागों का उत्तर वे बारी-बारी से अलग-अलग दें।
- कठिन शब्दों का लिखकर अभ्यास करवाना चाहिए तथा उनका विशेष अर्थ भी बताया जाना चाहिए।
- मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति पर उदाहरण द्वारा कक्षा में विशेष चर्चा करें।

अंक योजना-

प्रश्न 7

(i) प्रस्तुत कथन का वक्ता मिस्टर शामनाथ तथा श्रोता उनकी पत्नी है। वह माँ को झमेला इसलिए कह रहा है क्योंकि वह बहुत ही स्वार्थी प्रवृति का था तथा अपने चीफ को दावत पर बुला रहा था क्योंकि वह उनकी चापलूसी करके तरक्की पाना चाहता था। उसका साहब विदेशी था और माँ अनपढ़, तथा गाँव की होने के कारण कोई भूल चूक हो जाये और साहब नाराज़ हो जाएँ तथा उसकी तरक्की रूक जाये।

(ii) श्रोता शामनाथ अपनी माँ को लेकर चिंतित है क्योंकि वह किसी भी स्थिति में चीफ के सामने अपनी माँ को नही ले जाना चाह रहा है। उस का घर छोटा है इसलिए माँ का चीफ के सामने आना संभव हो सकता है। दूसरा कारण ये था कि उसकी माँ अनपढ़ तथा गांव की थी ओर उसके घर आने वाला चीफ विदेशी था इसलिए उसे इस बात की संभावना सबसे अधिक लग रही कि कहीं चीफ का आमना-सामना माँ से हो गया तो ना आने माँ उसको क्या कह दे जिससे उसका चीफ नाराज़ हो जाये।

न्हीं उसका चिंता करना अनुचित है माँ बाप हमारी शान होते हैं, चिंता का विषय नहीं होते, आज हम जिस स्थान पर बैठे हैं वहाँ तक पहुँचने में आज उन्हीं का हाथ है इसलिए उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि यह भी एक झमेला है, अब इनका क्या करें।

अंक योजना–

प्रश्न 7

(iii) चीफ शामनाथ के दफ्तर के बड़े अधिकारी हैं। शामनाथ ने उन्हें अपने घर दावत पर बुलाया है क्योंकि वह अवसरवादी व चापलूस व्यक्ति है और वह चापलूसी के बल पर पदोन्नति चाहता है। इसके लिए उसने बहुत सी तैयारियाँ की थी जैसे कुर्सी, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल सब बरामदे में पहुँचा दिए थे, मेहमानों के बैठने का इंतजाम बैठक में कर दिया था। घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे तथा पलंगों के नीचे छिपा दिया था। माँ क्या पहने, कैसे बैठे, क्या करे, पत्नी क्या करे, क्या पहने इत्यादि बातों का भी पहले से ही इंतजाम कर दिया था।

(iv) प्रस्तुत कहानी में सरकारी कार्यालयों में फैले भ्रष्टाचार के प्रत्यक्ष रूप से दर्शन होते है जिसमें आज के सामाजिक जीवन की मूल्यहीनता तथा भ्रष्टा आचरण को संकेतित किया गया है। आज कार्यालयों में पदोन्नति योग्यता के बल पर नहीं बल्कि चापलूसी के बल पर मिलती है। बड़े साहब जिस पर भी प्रसन्न हो गए उसकी तरक्की पक्की हो जाती है। इसी के साथ-साथ आज रिश्वत खोरी का प्रचलन भी इसी प्रकार बढ़ता जा रहा है जिसने उपहार दे कर प्रसन्न कर दिया उस की तरक्की निश्चित हो जाती है।

इसी के साथ आज का मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि थोड़ी सी पदोन्नति प्राप्त करने के लिए अपनी माँ तक की उपेक्षा कर देता है, परन्तु वही माँ जब उसके अधिकारी को खुश कर देती है तो प्रिय हो जाती है और वही माँ जो उसकी चिंता का विषय थी, उसकी जरूरत बन जाती है क्योंकि अब वह उसकी तरक्की का साधन है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

लेखक–प्रकाश नगायच

Question 8

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:–

"ठीक कहते हो कुमार ! समय की प्रतीक्षा करो, भगवान् महाकाल तुम्हारी सहायता करेंगे।"

(i) यहाँ कुमार शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जा रहा है ? उसे समय की प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ेगी ? [2]

(ii) महाकाल भगवान सहायता करेंगे, यहाँ किसकी सहायता की बात की जा रही है ? इस सहायता की आवश्यकता क्यों पड़ रही है ? [2]

(iii) इस समय कुमार की विवशता का क्या कारण है ? क्या उनका भय उचित था ? [3]

(iv) रामगुप्त की काली करतूतों का वर्णन कीजिए। [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ–

(i) अधिंकाश विद्यार्थी कुमार शब्द से अनुमान लगा कर ही सही उत्तर लिखे पाये। प्रश्न सीधा सा था अतः प्रथम भाग में छात्रों को कोई परेशानी नहीं हुई। प्रश्न के द्वितीय भाग में 'समय की प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ेगी' वाले भाग में अधिकतर छात्र भ्रमित रहे। उचित कारण बताने में वे असफल रहे।

(ii) प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर अधिकांश छात्रों ने सही लिखा। महाकाल भगवान एवं उनके द्वारा की जाने वाली सहायता किसकी और क्यों का सटीक उत्तर लिखने में छात्र असमर्थ रहे। गृहयुद्ध के स्थान पर अन्य कारण लिखे गये।

(iii) प्रश्न 2 के द्वितीय भाग तथा इस प्रश्न के प्रथम भाग में समानता थी अतः अधिकतर छात्रों ने सही उत्तर दिये। अधिकांश छात्र कुमार की विवशता का कारण एंव उनके भय का औचित्य नहीं लिख पाये।

(iv) इस प्रश्न का सही उत्तर अधिकतर विद्यार्थियों ने लिखा। सीधा प्रश्न होने के कारण छात्रों को सरलता हुई। रामगुप्त की काली करतूतों को लेकर कुछ छात्र भ्रमित भी रहे तथा एक ही बात की पुनरार्वति भी की।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- छात्रों को बार-बार उपन्यास पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- अध्यापक भाव विद्यार्थियों तक पहुँचाने पर अधिक ध्यान दें।
- उपन्यास में वर्णित प्रत्येक घटना को विस्तार पूर्वक समझाएँ तथा लिखित अभ्यास कराया जाये।
- उपन्यास का मंचन करवाकर आसानी से छात्रों का समझाया जा सकता है। अध्यापकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को यह बताया जाना चाहिए कि प्रश्न में जहाँ भी थोड़ा संदेह हो तो बार-बार प्रश्न पढ़ें और अपेक्षित सही उत्तर लिखें।
- कठिन शब्दों के अर्थ कक्षा में बताया जाना चाहिए जिससे उनके अर्थ समझते समय छात्र उलफन में न पड़ें।
- उपन्यास की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है अतः छात्रों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कुछ संदर्भ बताया जाना चाहिए।
- विचारात्मक प्रश्नों का अभ्यास कक्षा में करवाया जाना चाहिए।

अंक योजना–

प्रश्न 8

(i) यहाँ कुमार शब्द का प्रयोग चंद्रगुप्त के लिए किया है। यहाँ कुमार को समय की प्रतीक्षा करने की बात इसलिए कही जा रही है क्योंकि इस समय सम्पूर्ण देश की स्थिति नाजुक चल रही है। यदि ऐसे में रामगुप्त के विरूद्ध कोई कदम उठाया तो गृहयुद्ध होने की संभावना है क्योंकि मालवा गुजरात सौराष्ट्र के शकों ने थोड़ा-सा स्थिति का अंदाजा होते ही छुअपुट हमले करने आरम्भ कर दिए थे और दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर भी बहुत से आक्रमण हो गए थे।

इसलिए राजपुरोहित विष्णु शर्मा ने कहा कि यह समय नहीं है विरोध करने का, जब तक स्थिति सामान्य नहीं हो जाती है, उसे समय की प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी।

(ii) महाकाल भगवान सहायता करेंगे। यहाँ चंद्रगुप्त को दी जाने वाली सहायता की बात की जा रही है क्योंकि भले ही आज भी चंद्रगुप्त की तलवार में इतनी शक्ति है कि वह पलक झपकते ही रामगुप्त और उसके साथियों को मौत के घाट उतार सकता है लेकिन उसका परिणाम गृहयुद्ध हो सकता है और इस युद्ध से मगध की नहीं समूचा देश भस्म हो जायेगा और यह विद्रोह देशद्रोह बन जायेगा जिसमें असंख्य बेकसूर मारे जायेंगे।

इसलिए भगवान महाकाल की सहायता की बात की जा रही है। विपरीत परिस्थितियाँ होने के कारण महाकाल की सहायता की आवश्यकता है।

(iii) इस समय कुमार की विवशता का कारण यह है कि समर्थ होते हुए भी वे रामगुप्त के अत्याचारों का विरोध नहीं कर पा रहे थे क्योंकि गृहयुद्ध की आशंका ने उन्हें भयभीत कर दिया था। हाँ उनका भय उचित था क्योंकि उस समय मगध की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति नाजुक थी।

(iv) रामगुप्त जो कहने को तो चंद्रगुप्त का बड़ा भाई था लेकिन गुणों में बिल्कुल चंद्रगुप्त के विपरीत है। उसकी नीचता का सबसे बड़ा उदाहरण है कि वह कायर, नपुंसक तथा अत्याचारी है इसलिए उसने अपने ही पिता को पहले बंदी बनाया फिर हत्या कर दी। अपने भाई को जो युद्ध करने अयोध्या गया हुआ था उसके पीछे ही उसकी राजगदी छीन ली तथा उसकी मंगेतर से जबरदस्ती विवाह कर लिया। प्रजा पर अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए। प्रजा पर अनावश्यक कर लगा दिए, पाठशालाओं तथा अनाथ अश्रामों के चंदे बंद करवा दिए। सर्वत्र अन्याय का ही वातावरण छा गया।

Question 9

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

“भारतीय कन्याएँ जीवन में पति का वरण केवल एक बार करती हैं, सो आप आज से दो वर्ष पहले ही कर चुकी हैं ...... और फिर रामगुप्त की दुर्बलता किसी से छिपी नहीं।”

(i) ‘भारतीय कन्याएँ’ से क्या तत्पर्य है ? उनकी कौन-सी विशेषताओं का वर्णन किया गया है ? [2]

(ii) किसने, किसका वरण किया था ? यह कार्य किसकी आज्ञा से हुआ और क्यों ? [2]

(iii) रामगुप्त कौन है ? यह किसका पति होने के योग्य नहीं है और क्यों ? समझाइए। [3]

(iv) शकराज कौन था ? उसने रामगुप्त की सेना को किस प्रकार सरलता से घेर लिया ? समझाइए [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ–

(i) 'भारतीय कन्याएँ' से तात्पर्य छात्र लिखने में असमर्थ रहे। अधिकतर छात्रों ने मात्र ध्रुवस्वामिनी के विषय में ही लिखा। बहुत सारे छात्रों ने दोनों भागों का उत्तर एक ही लिख दिया कि पति का वरण केवल एक ही बार करती है। विशेषताओं की ओर भी ठीक से ध्यान नहीं दिया।

(ii) इस प्रश्न का उत्तर अधिकतर छात्रों ने सही लिखा। परन्तु आज्ञा किसकी थी और क्यों इस बिन्दु पर विद्यार्थी भ्रमित रहे। कुछ छात्रों ने लिखा लिखा कि ध्रुवस्वामिनी का वरण रामगुप्त ने किया तथा शिखर स्वामी की आज्ञा से किया जो प्रश्न का गलत उत्तर था?

(iii) अधिकांश विद्यार्थी इस प्रश्न का उत्तर समुचित दे पाये। रामगुप्त नामक पात्र से छात्र परिचित पाये गये। वहीं कुछ छात्र एक ही बात दोहराते रहे। समग्रतः छात्रों का प्रयास सराहनीय रहा।

(iv) इस प्रश्न में शकराज का परिचय पृथक-पृथक मिला। अधिकांश छात्रों ने सही उत्तर लिखा। रामगुप्त की सेना को शकराज ने किस प्रकार सरलता के घेर लिया यानि प्रश्न का दूसरा भाग अधिकतर छात्र स्पष्ट नहीं कर सके।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- अध्यापक छात्रों को उपन्यास के प्रत्येक अध्याय का सविस्तार अध्ययन करायें।
- प्रश्नों के उत्तर अपने विवेक से देने तथा प्रश्न के किसी भी भाग को नहीं छोड़ने के लिए छात्रों को विशेष निर्देश देना चाहिए।
- उपन्यास को बार-बार पढ़ने के लिए छात्रों को निर्देश दिया जाना चाहिए।
- उपन्यास पढ़ाते समय भारतीय संस्कृति तथा उससे जुड़ी विशेषताओं व मान्यताओं का भी संक्षेप में परिचय देना चाहिए।
- उपन्यास के आधार पर इतिहास के ऐसे तथ्यों से अवगत कराना चाहिए जो छात्रों के लिए सहायक साबित हो।
- चारित्रित विशेषता बतानेवाले प्रश्नों का अभ्यास करवाना चाहिए तथा तुलनात्मक व्याख्या करना भी सिखाया जाना चाहिए।
- छात्रों को विचारात्मक व विवरणात्मक प्रश्नों का अधिकाधिक अभ्यास करवाया जाना चाहिए।
- उपन्यास के प्रत्येक घटना को पढ़ने तथा उसे हृदयंगम करने का निर्देश दिया जाना चाहिए जिससे घटना विशेष के जुड़े प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकें।

अंक योजना–

प्रश्न 9

(i) भारतीय कन्याओं से तात्पर्य उन स्त्रियों से हैं जो भारत में पल कर बड़ी हुई हैं साथ ही भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। भारतीय कन्या जीवन में पति का वरण एक बार ही करती है। यही कारण है कि यदि वो विधवा हो जाती है तो पुनर्विवाह नहीं करती। ध्रुवस्वामिनी ने दो वर्ष पूर्व चंद्रगुप्त का वरण किया था जब समुद्रगुप्त ने उन दोनों के विवाह कि घोषणा कि थी। आज परिस्थितियाँ परिवर्तित हो गयी है। विदेशी प्रभाव के कारण आज विवाह में उतने सख्त नियम नहीं हैं। आज यदि किसी कारणवश विवाह टूट जाये, तलाक हो जाये या विधवा हो जाये तो पुनः विवाह कर लिया जाता है। अतः अब भारतीय कन्याओं का वो भाव नहीं रहा। जीवन मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं और मेरे विचार से इसमें कुछ गलत भी नहीं है ; क्योंकि समय के अनुसार मनुष्य को बदल जाना चाहिए।

(ii) ध्रुवस्वामिनी ने चन्द्रगुप्त का दो वर्ष पहले वरण किया था। ध्रुवस्वामिनी के पिता की सेना सतलुज नदी के किनारे कई महीनों से मोर्चा बाँधे पड़ी थी और पूर्वी किनारे पर समुद्रगुप्त की सेना जिसके युवराज चन्द्रगुप्त सेनापति थे। मूसलाधार वर्षा के कारण दोनों शिवरों में कीचड़, पानी से बीमारी फैल गई। एक दिन अचानक सतलुज पार कर चन्द्रगुप्त के सैनिकों ने ध्रुवस्वामिनी के पिता की सेना पर आक्रमण कर दिया। उसके पिता को संधि का प्रस्ताव भेजना पड़ा। जिसको चन्द्रगुप्त ने स्वीकार तो किया पर बदले पें ध्रुवस्वामिनी का हाथ माँग लिया। सम्राट समुद्रगुप्त ने युवराज चन्द्रगुप्त की इस महान विजय पर प्रसन्न होकर ध्रुवस्वामिनी को उपहार स्वरूप उसी को देते हुए उन दोनों के विवाह की घोषणा की। इस प्रकार यह कार्य पिता की आज्ञा से ही हुआ।

(iii) रामगुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का बड़ा है, जिसने पिता की बीमारी का पता चन्द्रगुप्त को नहीं दिया। पिता ने अपने राज्य का उत्ताधिकारी चन्द्रगुप्त को बनाया था। रामगुप्त ने पिता की मृत्यु तथा चन्द्रगुप्त के ना होने का लाभ उठाकर राज्य पर अधिकार कर लिया तथा चन्द्रगुप्त की होने वाली पत्नी से भी जबरदस्ती विवाह कर लिया। वह ध्रुवस्वामिनी का पति होने योग्य नहीं है, क्योंकि वह कायर है नपुंसक है अन्यायी है जिसने अपने पिता की इच्छाओं और आज्ञाओं को ठुकराकर अपने छोटे भाई के अधिकार को छीना है। ध्रुवस्वामिनी के लिए चन्द्रगुप्त जैसा वीर पति ही वरण करने योग्य था।

(iv) शकराज खारवेल था। वह सम्राट चन्द्रगुप्त के आक्रमण और उससे होने वाले विनाश को देख चुका था। वह उसका बदला रामगुप्त से लेना चाहता था। वह कश्मीर का राजा रहा था। उसने रामगुप्त का मित्रता का सन्देश ठुकरा दिया था। रामगुप्त ने जिस स्थान पर सेना की छावनी बनाई थी, वह स्थान तीन ओर से ऊँची–ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ था। एक ओर से बाहर निकलने का मार्ग था। छुटपुट लड़ाई हो रही थी। इसी बीच रामगुप्त और उसकी सेना जब पहाड़ियों से घिरी स्वयं को सुरक्षित महसूस कर रही थी, शकराज और उसकी सेना ने पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया क्योंकि उनका विरोध करने वाला वहाँ कोई नहीं था।

Question 10

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:–

चंद्रगुप्त ने चौंककर पूछा और झल्लाहट-भरे स्वर में बोला - "जब विनाश काल आता है, बुद्धि नष्ट हो जाती है।"

(i) चंद्रगुप्त कौन है ? वह किससे तथा कब बात कर रहा है ? [2]

(ii) चंद्रगुप्त ऐसा क्यों कहता है कि विनाश काल में बुद्धि नष्ट हो जाती है। यहाँ किसकी बुद्धि नष्ट हो गयी है ? [2]

(iii) ऐसा क्या हो रहा था कि विनाश तक की बात सोची जा रही थी ? [3]

(iv) प्रस्तुत उपन्यास के आधार पर सिद्ध कीजिए कि सिंहासन पर बैठने का अधिकार केवल योग्य और वीर पुरूष को ही होता है। [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ-

(i) इस प्रश्न का उत्तर प्रायः सभी छात्रों ने सही लिखा। चन्द्रगुप्त का परिचय तो सटीक दिया परन्तु वह किससे तथा क्या बात कर रहा है इसे अधिकतर छात्र स्पष्ट नहीं कर पाये। प्रश्न के दूसरे भाग में देववर्मा व देवसेना को लेकर छात्र दुविधा में रहे।

(ii) अधिकांश छात्रों ने प्रश्न का उत्तर तो सही लिखा किन्तु कहीं-कहीं अभ्यिक्ति में स्पष्टता नहीं थी। कहीं-कहीं यह भी पाया गया कि प्रश्न पूछा गया किसी और अध्याय से है लेकिन छात्रों ने उत्तर लिखने का प्रयास किया गया।

(iii) प्रश्न 10 के द्वितीय एवं तृतीय भाग में समानता होने के कारण उत्तर में पुनरावृत्ति का आभास हो रहा था। अधिकांश विद्यार्थियों ने सही तथा समुचित उत्तर लिखा। वहीं कुछ छात्र घटना का वर्णन करने में असमर्थ रहे।

(iv) यद्यपि प्रश्न का उत्तर वर्णनात्मक था तथापि विद्यार्थियों ने सही उत्तर लिखने का प्रयास किया। कुछ छात्र प्रश्न की गहराई को समझ नहीं पाए और उत्तर लिखने में भ्रमित हो गए, वहीं कुछ छात्रों ने सिर्फ रामगुप्त की काली करतूतों का वर्णन कर अपूर्ण उत्तर दिया।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- अध्यापक उपन्यास पढ़ाते समय नामें को रेखांकित कराये ंतो छात्रों को नाम याद रहेगें।
- विद्यार्थियों को समस्त प्रात्रों के विषय में विस्तार से समझाया जाना चाहिए ताकि वे किसी उलझन में न पड़ें।
- उपन्यास के सभी तथ्यों को विस्तार से समझाया जाये तथा उन तथ्यों के आधार पर अभ्यास भी कराया जाना चाहिए।
- उपन्यास के किसी विशेष-विशेष अंक का मंचन कराने से भी तथ्यों को समझाना तथा याद रखना सरल होता है। ऐसे प्रयास भी किए जाने चाहिए।
- प्रश्न के सभी भागों के पृथक-पृथक उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए। तथा मुख्य बिन्दु भी याद करवाना चाहिए।
- उपन्यास के प्रत्येक सर्ग के अन्तर्गत वर्णित घटना का स्पष्ट तौर पर अध्ययन कराना चाहिए।
- छात्रों को यह स्पष्ट रूप से बताना चाहिए कि प्रश्न का उत्तर लिखने के पश्चात् एक बार सरसरी नजर से देख लें कि कहीं कुछ छूट न गया हो।
- दो चरित्रों का तुलनात्मक व्याख्या द्वारा भी प्रश्नों को स्पष्ट किया जाना चाहिए ताकि इस प्रकार के उत्तर सरलता से दिए जा सकें।

अंक योजना–

प्रश्न 10

(i) चन्द्रगुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का छोटा पुत्र है जो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम से जाना जाता है। वह इस समय अपने अभिन्ना मित्र देववर्मा से बातें कर रहे हैं।

यह दोनों उस समय बातें कर रहे हैं जब उन्हें पता चला कि आज उनके भाई की कायरता और बेवकूफियों की वजह से अखंड भारत फिर खंड-खंड होता नज़र आ रहा है। तथा शकराज खारवेल ने खोये हुए कश्मीर ही नहीं मद्र भी अधिकार का लिया है और मगध सम्राट शकराज की सभी शर्तें मानकर संधि कर लेना चाहते हैं।

(ii) चन्द्रगुप्त जो इस उपन्यास का मुख्य पात्र है, वह कुशल योद्धा, समझदार, दूरदर्शी, कुशल संचालक है। वह यह बात इसलिए कहता है कि जब विनाश काल आता है तो बुद्धि नष्ट हो जाती है क्योंकि पहले तो मगध के वर्तमान सम्राट रामगुप्त जो धोखेबाज, कायर, कपटी है, उसने अपने पिता को मारा, फिर छोटे भाई की वाग्दत्ता से जबरन विवाह किया प्रजा पर मनमाना अत्याचार किया और अब उस भारत को खंड-खंड करने पर तुला हुआ है जिसे उनके पिता ने अथक परिश्रम के द्वारा अखंडित किया था; क्योंकि वह शकराज खारवेल से कश्मीर की संधि करना चाहता है। यहाँ वर्तमान मगध सम्राट रामगुप्त की बुद्धि नष्ट होने की बात की जा रही है ; क्योंकि वह गलतियों पर गलतियाँ किये जा रहा है।

(iii) ऐसा यह हो गया था जो विनाश की बात सोची जा रही क्योंकि पहले तो उनके अन्याय, अत्याचार और कायरता के कारण गुप्त साम्राज्य ही पतन की, कगार पर खड़ा हो गया था और गुप्त साम्राज्य ही क्या पूरा भारत खड़-खड़ होता नज़र आ रहा था तथा कश्मीर जो भारत का विशेष अंग है, अंग ही नहीं शिरोभाग है जिसे प्राप्त करने के लिए उनके पिता समुद्रगुप्त ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी उसे ही आज कायर, नपुंसक, रामगुप्त शकराज खारवेल के हाथों में सौंपने जा रहे थे और यदि ऐसा होता तो अखंड भारत का सपना सदा के लिए नष्ट हो जाता।

(iv) राज-सिंहासन व धरती का राज्य वीरों के लिए होता है। 'वीर भोग्या वसुन्धरा' यदि कोई लुटेरा कायर राज्य-लक्ष्मी पर अधिकार का लें, तो वह भी सशक्त व वीर व्यक्ति को अपने ऊपर आसीन होते हुए देखना चाहता है।

एकांकी सुमन

Question 11

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिएः-

"यह तो अपनी-अपनी समझ की बात है। मैं तो कहूँगा दोनों ने अक्लमंदी की। लड़की वालों ने भी और लड़के वालों ने भी। इस महँगाई के ज़माने में सैकड़ों की बारात लेकर चलना अक्लमंदी की बात नहीं है। "

– मेल मिलाप –

लेखक- देवराज दिनेश

(i) वक्ता कौन है ? वह कैसा व्यक्ति है ? [2]

(ii) वक्ता के कथन के उत्तर में श्रोता ने क्या कहा तथा क्यों ? [2]

(iii) यहाँ किस 'अक्लमंदी' की बात की जा रही है ? इसके माध्यम से हमें क्या सीख मिलती है ? [3]

(iv) 'मेल-मिलाप' ही स्वस्थ समाज की रीढ़ है - इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिये [3]

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ-</u>

(i) अधिकांश छात्रों ने सही उत्तर लिखा। वक्ता तथा श्रोता के नाम पर कुछ छात्र भ्रमित थे। वक्ता के नाम पर 'पुरोहित' शब्द का भी प्रयोग किया गया। कुछ छात्रों ने वक्ता 'रघुराज' लिखा क्योंकि उन्होंने इस कथन को मंगल की बेटी के विवाह की घटना के साथ जोड़ दिया। जो गलत है।

(ii) अधिकांश विद्यार्थियों ने सही उत्तर लिखा। उन छात्रों ने जिन्होंने पहले प्रश्न का उत्तर गलत लिखा उन्होंने ही दूसरे प्रश्न का भी उत्तर गलत लिखा। साथ ही घटना को भी स्पष्ट तौर पर नहीं लिख पाये। वैसे छात्रों के प्रयास सराहनीय रहे।

(iii) अधिकतर विद्याथियों ने संतोषजनक उत्तर दिए। 'अक्लमंदी' की बात का भी गहराई से स्पष्ट किया गया। हाँलाकि कुछ छात्र उत्तर देने में थोड़े भ्रमित दिखाई दिये। पाठ से मिलने वाली सीख में केवल मेल मिलाप से रहना ही स्पष्ट किया। अन्य सीखों की कोई चर्चा नहीं की गई।

(iv) इस प्रश्न का उत्तर वर्णनात्मक था। इसमें स्वयं के विचार प्रकट करने थे। इसे सामान्य ज्ञान के आधार पर ही लिखा जा सकता था। कुछ छात्रों के प्रयास तो सराहनीय रहे पर कुछ छात्र भ्रमित भी रहे। वे अपने विचारों का स्पष्ट नहीं कर पाये। छात्रों की भाषा में उत्कृष्टता का अभाव पाया गया।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव-</u>

- एकांकी को बार-बार पढ़ने का निर्देश दिया जाना चाहिए तथा एक-एक घटना को हृदयगंम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- प्रमुख चरित्रों के नाम नाटक में विशेष रूप से बताए जाने चाहिए तथा इस बात का विशेष निर्देष दिया जाना चाहिए कि प्रश्न का उत्तर लिखते समय वक्ता तथा श्रोता के नाम जरूर लिखें।
- सन्दर्भ एवं प्रसंग संबन्धी प्रश्नों का अभ्यास बार-बार करवाना चाहिए।
- छात्रों को प्रत्येक प्रश्न ध्यानपूर्वक पढ़कर समझते हुए निर्देशानुसार उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- अध्यापक द्वारा पाठ के प्रत्येक पहलू की विशेष व्याख्या होनी चाहिए।
- प्रत्येक एकांकी से सामान्य ज्ञान के सम्बन्धित उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- एकांकी अत्यन्त सरल है। कक्षा में कुछ दृश्यों क मंचन करवाया जाना चाहिए।
- भाषा एंव वर्त्तनी सम्बन्धी अभ्यास भी बार-बार करवाया जाना चाहिए।

<u>अंक योजना-</u>

प्रश्न 11

(i) प्रस्तुत कथन का वक्ता हीरा पंडित है जो गांव का पुरोहित है लेकिन पंडिताई नहीं करता है, खेती बाड़ी का काम करता है। वह किशनसिंह तथा मंगलसिंह दोनों का ही मित्र है। वह बहुत समझदार, दूरदर्शी तथा मेलमिलाप में विश्वास रखने वाला व्यक्ति है।

(ii) श्रोता रघुराज हीरा पंडित के कथन के उत्तर में यह कहता है कि तुमने तो कसम खा रखी है किशनसिंह की तारीफ करने की, कहीं अच्छी दक्षिणा-वक्षिणा तो नहीं मिल गयी। क्योंकि रघुराज एक बेकार कपटी व्यक्ति था, वह हीरा पंडित यह सुनकर क्रोधित हो जाता है और वह क्रोध में आ कर रघुराज सिंह से कहता है कि तुम जैसे हो वैसा ही दूसरों को समझते हो।

(iii) यहाँ लड़के वालों की इस अक्लमंदी की बात की जा रही है। कि उन्होंने का बारात लाकर फिजुल खर्ची पर रोक लगाई थी। गांव में किशनसिंह की बेटी की शादी थी जिसमे लड़के वाले बीस पच्चीस आदमियों की बारात लेकर आये थे क्योंकि वह समझदार थे इसलिए उन्हें इस महंगाई के ज़माने में सैंकडों की बारात लेकर चलना मूर्खता लगाी।

ठसके माध्यम से हमें ये सीख मिलती है कि विवाह आदि समारोह में दोनों पक्षों की ओर से फालतू का खर्च करना कोई अक्लमंदी नहीं होती है।

(iv) मेल मिलाप अर्थात् मिलजुल कर चलना। यही एक स्वस्थ समाज की पहचान होती है ; क्योंकि वही राष्ट्र, वही समाज, वही परिवार तरक्की करता है जिसमें भावनात्मक एकता अर्थात मेल मिलाप होता है। मेल मिलाप से रहने से दुःख आधे हो जाते है ओर सुख दो गुने हो जाते है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज में मेल मिलाप से रहकर की जीवन चलता है जैसे प्रस्तुत एकांकी में मंगलसिंह रघुराज जैसे व्यक्ति के कुसंग में पड़ने के कारण पुरे गाँव का दुश्मन बन बैठा तथा मेल मिलाप की भावना ने उसे इस दुःख से उबार लिया तथा किशनसिंह की बेटी की शादी भी गाँव वालों की मेल मिलाप की भावना के कारण धूम धाम से सम्पन्न हो गयी।

Question 12

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिएः-

"महाराज सब बंदोबस्त आप ही देखते हैं। सारी फ़ौज को उतारकर खुद नाव पकड़ेंगे। इस उमर में और यह हिम्मत ! सुना है, अस्सी बरस के हो चुके।"

- विजय की वेला-

लेखक- जगदीश चद्रं माथुर

(i) प्रस्तुत कथन के वक्ता तथा श्रोता का परिचय दीजिए। [2]

(ii) महाराज कौन थे ? युद्ध के बारे में उनके क्या विचार थे ? [2]

(iii) प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिये। [3]

(iv) प्रस्तुत एकांकी की पृष्ठभूमि स्पष्ट करते हुए, इसकी मुख्य विशेषता बताइए। [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ-

(i) इस प्रश्न का उत्तर अधिकांश विद्यार्थियों ने सही लिखा। कुछ विद्यार्थी वक्ता और श्रोता के नाम पर भ्रमित रहे। कुछ छात्रों ने परिचय में कुछ भी नहीं लिखा। चूँकि नाम में भ्रमित थे अतः परिचय लिखने में भी संपूर्णता दिखाई नहीं दी।

(ii) अधिकांश छात्रों ने सही उत्तर दिया। महाराज के विषय में पूर्ण रूप से लिखा। विस्तार से सटीक परिचय दिया। परन्तु युद्ध के विषय में उनके क्या विचार थे इसे छात्र स्पष्ट नहीं कर सके। उनकी 'युद्धकला' का वर्णन भी कहीं- कहीं मिला परन्तु महाराज के अनुसार युद्ध हुनर है, कला है, यह नहीं लिखा।

(iii) अधिकांश छात्र एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। किसी ने आधा सही तो आधा गलत उत्तर लिखा। तीसरे व चौथे उत्तर में छात्रों का समानता प्रतीत हुई अतः बहुत सारे छात्र असमंजस की स्थिति में रहे। कुछ छात्रों ने बार-बार देश प्रेम शब्द की पुनरावृत्ति की।

(iv) अधिकांश विद्यार्थी एकांकी की पृष्ठभूमि स्पष्ट नहीं कर पाये। विषय के प्रति उनकी स्पष्टता अपूर्ण रही। कुछ छात्रों ने प्रयास किया लेकिन भ्रमित होने के कारण उद्देश्य को ही लिख दिया। एकांकी की विशेषता बताने में भी छात्र असमर्थ रहे। विशेषता के क्रम में भी 'देश प्रेम' शब्द की चर्चा बार-बार की।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कक्षा में पाठ को स्पष्ट रूप से समझाया जाना चाहिए।
- एकांकी के पठन से पूर्व छात्रों का परिचय दिया जाये तथा उनसे जुड़े सभी तथ्य स्पष्ट किए जाये।
- एकांकी के मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित कराकर उनका अर्थ स्पष्ट कराया जाना चाहिए।
- मुख्य पात्र का परिचय व चरित्र-चित्रण विशेष रूप के करवाना चाहिए।
- एकांकी में उद्देश्य, शिर्षक की सार्थकता तथा एकांकी का केन्द्रिय भाव इन सबका अभ्यास कक्षा में करवाए जाने चाहिए।
- इतिहास से जुड़ी कहानियों व पाठों को पढ़ाने से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि अवश्य बताई जानी चाहिए।
- कठिन शब्दों के अर्थ पाठ पढ़ाते समय स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- पृष्ठभूमि, उद्देश्य, विशेषता इत्यादि शब्दों में अन्तर बताया जाना चाहिए।
- कक्षा में कुछ प्रश्न देकर विचार-विमर्श करना चाहिए तथा वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर भी लिखवाने का अभ्यास कराया जाये।

अंक योजना-

प्रश्न 12

(i) प्रस्तुत कथन का वक्ता भीमा मल्लाह है जो एक कुशल मल्लाह है तथा महाराज कुँवरसिंह का विश्वासपात्र तथा सच्चा भक्त है।

श्रोता नाथू सरदार है जो शिवापुर घाट पर मल्लाहों का सरदार है तथा महाराज कुँवरसिंह का विश्वासप्रात्र भक्त है।

(ii) महाराज 1857 के गदर के सेनानी थे तथा बिहार मे जगदीशपुर के महाराज थे। वे एक कुशल योद्धा थे, युद्ध के विषय में उनके विचार थे कि युद्ध एक हुनर है, कला है। आँख मूँद कर शत्रु से भिड़ जाना युद्ध कला नहीं हैं। असली हुनर शतरंजी चालों से मात पर मात देने में है। फिरंगियों को मूर्ख बनाने में या छकाने में जो आनंद आता है, उसके आगे बाकी सभी आनंद फीके हैं।

(iii) विजय की बेला एकांकी का उद्देश्य पाठकों के मन में देश भक्ति, देश प्रमे तथा देश के लिए सर्वस्य न्यौछावर करने की भावना को जागृत करना है। उन शहीदों को याद करना भी उद्देश्य है जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश को स्वतंत्र कराने तथा अंग्रेजों को पराजित करने में ही बिता दिया तथा यह भावना जागृत करना कि देश की स्वतंत्रता से बड़ा कोई सुख नहीं है। सन् 1857 में इसी भावना से प्रेरित होकर अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का आगाज़ किया था जिसमें आज़ादी के दीवानों ने अपना तनम न धन न्योछावर कर दिया था। कुँवरसिंह भी उन्ही में से एक थे जिन्होंने अपनी आयु, अपने शरीर की परवाह किये बिना जीवन के अंतिम समय तक युद्ध किया था।

(iv) प्रस्तुत एकांकी की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। सन् 1857 में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध देश में विद्रोह की आग भड़क उठी थी। आज़ादी के दीवाने अपना तन-मन-धन न्यौछावर करने के लिए निकल पड़े थे। आज़ादी के उन दीवानों में आरा (बिहार) के राजा कुँवरसिंह जो अस्सी वर्ष के थे उन्होंने अंग्रेजी शासन की ईंट से ईंट बजा दी थी और फिरंगियों को अपने क्षेत्र से भागने के लिए विवश कर दिया था। साथ ही साथ इसकी यह भी विशेषता थी कि इस लड़ाई में जनसामान्य ने जैसे सेठ रैयत, मल्लाह, किसान, सभी ने मिल कर अंग्रेजों के खिलाफ छेड़े गए विद्रोह में अपनी जान की परवाह किये बिना बढ़ चढ़ कर भाग लिया था। शासक जन-सामान्य के भरपूर सहयोग से ही विषय हासिल करता है - यही भाव इस एकांकी की मुख्य विशेषता है।

Question 13

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

"वहाँ नहीं, आपको मेरे साथ चलना है। आपको जनता के पास चलना है। जनता बड़ी उत्तेजना में है विद्यार्थी पीछे रह गये, दूसरे समाजद्रोही तत्व आगे आ गए हैं और विजय ने गोली चलाने से इनकार कर दिया है।"

-सीमा रेखा-

लेखक- विष्णु प्रभाकर

(i) वक्ता तथा श्रोता का परिचय दीजिए। [2]

(ii) श्रोता कहाँ जा रहा था एवं क्यों ? [2]

(iii) सीमा रेखा एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिये। [3]

(iv) पारिवारिक सम्बन्धों की अपेक्षा कर्तव्य-पालन अधिक महत्वपूर्ण होता है - प्रस्तुत कथन का आधार बनाकर एक अनुच्छेद लिखिए। [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ-

(i) अधिकांश छात्र समुचित उत्तर देने में समर्थ रहे। प्रश्न सीधा व सरल था तथा प्रश्न में विजय नाम आने के कारण अधिकतर छात्रों को किसी प्रकार की समस्या नहीं हुई। कुछ विद्यार्थी कतिपय वक्ता तथा श्रोता के नाम से भ्रमित रहे।

(ii) अधिकांश विद्यार्थियों का प्रयास सराहनीय रहा। जो विद्यार्थी वक्ता व श्रोता के नाम से भ्रमित थे उन्हीं छात्रों ने त्रुटि की। कुछ छात्रों ने 'कहाँ' का नाम गलत लिखा तो कुछ 'क्यों' का सटीक उत्तर लिखने में असमर्थ रहे।

(iii) प्रश्न सीधा था इसलिए अधिकांश ने उत्तर सटीक एंव उचित लिखा। बहुत कम ऐसे छात्र थे जिन्हें 'औचित्य' शब्द का अर्थ समझने में कठिनाई हुई जिससे वे उत्तर स्पष्ट नहीं कर पाये।

(iv) प्रश्न सामान्य ज्ञान पर आधारित था परन्तु समझ के कारण अधिकांश छात्र इसका ठीक-ठीक उत्तर न दे पाए। अधिकांश छात्रों ने कथन का स्पष्टीकरण एकांकी के आधार पर नहीं किया। वहीं कुछ विद्यार्थियों ने एकांकी को ही केवल आधार बनाया । दोनों ही प्रकार के उत्तर अधूरे से प्रतीत हुए।

अध्यापकों के लिए सुझााव-

- छात्रों को एकांकी में वर्णित एक-एक पात्र विशेषकर वक्ता तथा श्रोता की भूमिका का महत्व बताया जाये।
- प्रत्येक एकांकी को आरंभ करने से पूर्व मुख्य पात्रों का परिचय व चरित्र-चित्रण कक्षा में बार-बार करवाया जाना चाहिए।
- प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही उत्तर लिखने के लिए छात्रों को प्रेरित करें व अभ्यास करायें।
- प्रत्येक एकांकी में शीर्षक की सार्थकता अवश्य स्पष्ट की जानी चाहिए।
- एकांकी के प्रत्येक पहलू का परिचय देते समय छात्रों को उसमें छिपे हुए मूल भावों का बोध कराया जाये।
- तुलनात्मक अध्ययन के सम्बन्धित वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर लिखने का अभ्यास करवाना आवश्यक है।
- शीर्षक का औचित्य, शिक्षा तथा उद्देश्य, इस प्रकार के विषयों पर कक्षा में विस्तार से चर्चा की जानी चाहिए।
- छात्रों की कल्पना शक्ति तथा रचनात्मकता के अनुसार कक्षा में भी इस प्रकार के प्रश्न देकर अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

अंक योजना-

प्रश्न 13

(i) प्रस्तुत कथन का वक्ता सुभाष है जो चारों भाइयों में सबसे छोटा है, उसकी आयु 44 वर्ष है तथा जन नेता है एवं श्रोता दूसरे नंबर का भाई है जो उपमंत्री है उसका नाम शरतचन्द्र है उस की आयु 52 है, यह आधुनिक नेता है।

(ii) उपमंत्री जिसका नाम शरतचंद्र है, यह कथन का श्रोता है वह इस समय जनता के पास न जाकर मंत्रिमंडल की बैठक में जाने की तैयारी कर रहे थे। क्योंकि वह एक स्वार्थी इंसान है, जब उसे वोट चाहिए थे तब वो जनता के पास वोट माँगने गए लेकिन आज जब जनता को उनकी आवश्यकता है तो वह उनके पास न जा कर मंत्रिमंडल की बैठक में जा रहे हैं।

(iii) सीमा रेखा एकांकी का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है इस एकांकी में प्रारंभ से लेकर अंत तक यही बताया गया है कि जनतंत्र में जनता और सरकार के बीच कोई विभजन सीमा रेखा नहीं होती है। एकांकी के प्रारंभ में पुलिस द्वारा सीमा रेखा का उल्लंघन करते हुए जनता पर गोली चलाना तथा एकांकी के मध्य में जनता का अपनी सीमा रेखा का उल्लंघन कर हड़तालें तोड़ फोड़ इत्यादि करना दिखाया गया है एवम एकांकी के अंत में भी दोनों के सीमा रेखा का उल्लंघन करने के कारण सरकार तथा जनता को एक अच्छा नगारिक एक नेता तथा एक पुलिस अधिकारी खोना पड़ा इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक उचित है।

(iv) प्रस्तुत एकांकी में यह स्पष्ट किया गया है कि पारिवारिक सम्बन्धों की अपेक्षा यदि व्यक्ति अपने कर्त्तव्य पालन की दिशा में दृढ़ता पूर्वक अग्रसर हो तो वर्तमान काल में व्याप्त समस्त समस्याओं का समाधान हो सकता है। समाज के सभी वर्ग यदि अपने अपने कर्त्तव्यों का पालन करें तो विभाजक रेखाएँ आड़े नहीं आती।

काव्य चन्द्रिका

Question 14

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow-

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिएः-

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन शीतल करे, औरन को सुख होइ।।
कस्तूरी कुंडलि बसे, मृग ढूँढे बन माँहि।
ऐसे घटि-घटि राम हैं, दुनियाँ देखे नाहि।।
तिनका कबहुँ न निन्दिए, जो पायन तर होय।
कबहुँक उड़ि आँखिन परै, पीर घनेरी होय।।

-नीति के दोहे-
कवि-कबीर दास

(i) कवि कैसी बोली बोलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, इससे क्या लाभ होता है ? [2]

(ii) कस्तुरी मृग के माध्यम से कवि मानव मन के किस अज्ञान का वर्णन कर रहे हैं ? स्पष्ट कीजिये। [2]

(iii) तिनके जैसी छोटी चीज़ का निरादर क्यों नहीं करना चाहिए ? ऐसा करने से क्या हानि होती है ? [3]

(iv) कबीरदास जी किस भक्ति-धारा के कवि थे ? उनके विषय में एक अनुच्छेद लिखिये। [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ–

(i) प्रायः सभी विद्याथियों ने स्पष्ट एवं सटीक उत्तर लिखे। कुछ छात्रों ने 'मीठी' के स्थान पर अच्छी भी लिखा। उसे स्पष्ट अच्छी तरह से किया। कुछ छात्र बोली का लाभ पूर्ण रूप से स्पष्ट करने में असमर्थ भी रहे।

(ii) यह प्रश्न थोड़ा दार्शनिक था फिर भी छात्रों ने अच्छा प्रयास किया। कुछ छात्रों ने गलत उत्तर लिखे। 'कस्तूरी' कहाँ होती है इसमें भी छात्र भ्रमित दिखाई दिए। कस्तूरी मृग के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन द्वारा समुचित उत्तर देने का भी प्रयास किया गया। कुछ छात्र मानव मन के अज्ञान का स्पष्टीकरण नहीं कर पाये।

(iii) इस प्रश्न का अधिकांश छात्रों ने सही उत्तर लिखा। कुछ छात्रों ने संक्षेप में उत्तर लिख दिया। वहीं कुछ ने भाव का वर्णन नहीं किया कि छोटे व्यक्ति का निरादर नहीं करना चाहिए। मात्र तिनके का ही वर्णन कर छोड़ दिया।

(iv) कबीीर की भक्ति धारा का ज्ञान अधिकांश विद्यार्थियों को नहीं था इसलिए इसे स्पष्ट करने में असमर्थ रहे। बहुत सारे छात्रों ने इनकी धारा सगुण बताकर सूरदास का परिचय लिख दिया। कृष्ण की भी चर्चा की। कुछ छात्र अनुच्छेद लेखन का अर्थ भी नहीं समझ पाये। सही आकलन से देखा जाए तो कुछ ही छात्र इसका सम्यक उत्तर दे पाये।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- काव्य में नीहित भाषा एंव भावों का गहन अध्ययन आवश्यक है इसे कक्षा में करायें।
- कविता में तुलनात्मक दृष्टिकोण से समानता और अन्तर को स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक दोहे का अर्थ विस्तार के बताया जाना चाहिए तथा आवश्यकता समझकर उदाहरण के साथ स्पष्ट करना चाहिए।
- भावों की अभिव्यक्ति का निरंतर अभ्यास करना चाहिए।
- छात्रों को स्पष्ट बताया जाना चाहिए कि दोहों या कविता भाव या अन्यार्थ भी लिखना चाहिए इससे अर्थ अधिक स्पष्ट होता है।
- भक्तिकाल के कवियों की रचना पढ़ाते समय उनकी भक्ति की धारा अवश्य स्पष्ट की जानी चाहिए। इसे आवश्यक समझकर बार-बार इस पर प्रकाश डालना चाहिए।
- कविता पढ़ाने से पूर्व कवि का परिचय व उनका काल अवश्य बताया जाना चाहिए। छात्रों को यह प्रेरित करना चाहिए कि वे कवि परिचय हृदयगंम कर लें।
- छात्रों को भवार्थ लिखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए तथा उनकी लेखन क्षमता सुधारने का प्रयास किया जाना चाहिए।

अंक योजना–

प्रश्न 14

(i) कवि मनुष्य को सदा मीठी वाणी बोलने के लिए प्रेरित कर रहा हैं। इस से यह लाभ होता है कि हमारा कोई शत्रु नहीं होता तथा हमारा मन तो प्रसन्न रहता ही है साथ ही साथ औरों को भी हमारे द्‌वारा खुशी ही मिलती है।

(ii) कस्तुरी मृग की नाभि में अत्याधिक सुगन्धित पदार्थ कस्तुरी विराजमान रहती है लेकिन वह अपने अज्ञान के कारण उस खुशबू को पहचान नहीं पाता है उसी प्रकार से मनुष्य भी अज्ञानी होता है, प्रभु का वास उस के अंतर्मन में होता है लेकिन वह अपने अज्ञान के कारण उन्हें देख नहीं सकता और उनके दर्शनों के लिए मंदिर मस्जिद गुरूद्‌वारे चर्च इत्यादि में भटकता फिरता है।

(iii) अधिकांश मनुष्यों की प्रवृत्ति होती है कि वह छोटी- छोटी चीज़ों की बहुत उपेक्षा करते है जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि कई बार छोटी चीज़ हमारे अधिक काम आती है और पता नहीं कब यह तिनके जैसी चीज़ उड़कर हमारी आँखों में गिर जाये, तो हमें अत्यधिक पीड़ा भी हो सकती है। हर वस्तु व व्यक्ति महत्वपूर्ण है।

(iv) कबीर दास जी निर्गुण भक्तिधारा के कवि थे उनके राम दशरथ के पुत्र राम नहीं बल्कि रमताराम थे जो एक ईश्वर है और सभी के हृदय में निवास करते है। कहते हैं उनके जन्म के विषय में किसी को सही ढंग से पता नहीं था क्योंकि उनके माता पिता ने उनको लहरतारा नदी के किनारे प्राप्त किया था। यह भी कहते हैं कि कबीरदास जी अनपढ़ थे, वह एक घुमक्कड़ संत थे, उनके विचारों से लोग बहुत प्रभावित रहते थे और यही कारण था कि बहुत से लोग उनके सेवक बन गए और उनके द्वारा कही गई बातें दोहों के रूप में स्पष्ट कर दी। इसलिए इनके दोहों की भाषा पंचमेल खिचड़ी होती थी। इनके द्वारा कही गई ज्ञान की बातें आज भी उतनी सटीक तथा सार्थक हैं जितनी वर्षों पहले होती थी।

Question 15

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:-

क्षुधार्थ रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

-मानवता-

कवि-मैथिलीशरण गुप्त

(i) यह कविता कहाँ से ली गयी है ? इसके माध्यम से कवि ने किन जीवन-मूल्यों का वर्णन किया है ? [2]

(ii) 'दधीचि' कौन थे ? उन्होंने मानवता का परिचय किस प्रकार दिया था ? [2]

(iii) "अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे" - पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिये। [3]

(iv) 'मानवता' से आप क्या समझते हैं ? इस कविता से आपको क्या प्रेरणा मिली ? [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ–

(i) अधिकांश छात्रों ने उत्तर सही लिखा परन्तु प्रश्न के प्रथम भाग को स्पष्ट नहीं कर पाये। पुस्तक का नाम लिखा परन्तु 'भारत भारती' रचना से अनभिज्ञ दिखाई दिए।

(ii) अधिकांश विद्यार्थी 'ऋषि दधीचि' व उनके द्वारा किए गए त्याग से परिचित थे अतः उन्होंने समुचित उत्तर दिया। कुछ छात्रों ने त्याग को स्पष्ट रूप से नहीं लिखा। कुछ ने त्याग तो लिखा पर मानवता शब्द से भ्रमित दिखाई दिए।

(iii) अधिकांश छात्र इस प्रश्न का सटीक उत्तर नहीं लिख पाये। प्रश्न में पूछे गये पंक्ति का भाव लिखने में अधिकांश विद्यार्थी भ्रमित रहे। कुछ छात्रों ने केवल शाब्दिक अर्थ लिख दिया। 'अनित्य' और 'अनादि' शब्द बच्चों को कठिन लगे इसलिए पूछी गई पंक्ति का भाव स्पष्ट करने में छात्र असमर्थ रहे।

(iv) प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर अधिकांश छात्रों ने सही लिखा। हाँलाकि दोनों ही प्रश्न सीधे एंव सरल थे पर छात्रों द्वारा स्पष्ट उत्तर नहीं मिला। कुछ छात्रों ने प्रश्न के प्रथम भाग का उत्तर बिल्कुल नहीं लिखा। कविता से मिलने वाली प्रेरणा को अधिकतर छात्र स्पष्ट नहीं कर सके।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

- कविता पढ़ाते समय शाब्दिक अर्थ ही नहीं, उसमें निहित मूलभाव भी स्पष्ट किए जाए।
- कविता यदि किसी और ग्रंथ से उद्धृत हो तो उस ग्रंथ का भी परिचय दिया जाना चाहिए।
- कविता से सम्बन्धित सन्दर्भ व प्रसंग को पूर्ण रूप से स्पष्ट करके समझाना चाहिए।
- महापुरूषों से सम्बन्धित त्याग, बलिदान की अन्र्तकथाएँ अवश्य स्पष्ट की जानी चाहिए।
- कविता पढ़ाते समय अनेक बार उसमें छिपे भावों को छात्रों तक कई उदाहरणों द्वारा पहुँचाया जाना चाहिए।
- दैनिक जीवन में किए गए छोटे-छाटे उदाहरणों द्वारा भी छात्रों को समझाया जाए व अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- कविता से प्राप्त होने वाली प्रेरणा का विश्लेषण पढ़ाते समय भली-भाँति किया जाना चाहिए।
- ऐसे सन्दर्भों से जुड़े प्रश्न कक्षा में देकर बार-बार उसका अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

<u>अंक योजना-</u>

प्रश्न 15

(i) प्रस्तुत कविता भारत भारती नामक रचना में से ली गई है, इस के माध्यम से अतीत के गौरव गान, भारतीय संस्कृति की गरिमा राष्ट्र प्रेम और उदात्त तथा शाश्वत जीवन मूल्यों की गरिमा की अभिव्यक्ति हुई है तथा इस के माध्यम से मानवप्रेम तथा सहानुभूति ही श्रेष्ठ धर्म होता है इस का भी पाठ पढ़ाया गया है।

(ii) दधीचि एक ऋषि थे जो सरस्वती नदी के तट पर रहते थे। प्राचीन युगों में देवताओं और राक्षसों में निरंतर संघर्ष चलता ही रहता था। व्रत्रासुर असुरों का नेता था देवता घबरा कर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे वहाँ अपनी व्यथा सुनाई। ब्रह्मा जी ने कहा कि सरस्वती नदी के तट पर रहने वाले दधीचि से प्रार्थना करो वे अपनी अस्थियाँ दान में दे दें। उनसे एक वज्र नामक अस्त्र बनेगा जिससे वृत्रासुर को मारा जा सकेगा। जब इंद्र ने पूछा कि हम अस्थियाँ मांगेगे कैसे तब ब्रह्मा जी ने कहा कि दधीचि का जन्म परोपकार के लिए ही हुआ है। तब इंद्र आदि देवता दधीचि के पास गए और उन्हें अपनी सारी कथा सुनाई। इंद्र ने कहा वृत्रासुर केवत आपकी अस्थियों के बनाये वज्र से ही मर सकता है यह सुनकर ऋषि बोले कि मेरा जीवन धन्य हो गया। उन्होंने तभी अपने प्राणों का सहर्ष त्याग कर दिया तब देवताओं ने उनकी अस्थियों से वज्र नामक अस्त्र बनाया और राक्षसों के साथ युद्ध किया इस प्रकार दधीचि के उपकार से वृत्रासुर नामक राक्षस का अंत हो गया।

(iii) यह हमारा शरीर अनित्य है अर्थात् सदा रहने वाला नहीं है, इसलिए सदा रहने वाली आत्मा को शरीर के नष्ट होने के भय से भयभीत नहीं होना चाहिए अर्थात् मनुष्य को इस शरीर के नष्ट होने का भय से न डरते हुए सदैव दूसरों की भलाई करनी चाहिए क्योंकि सच्चा मनुष्य वही होता है जो दूसरों कि भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है। क्योंकि मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है जो दूसरों के लिए अपने प्राण न्याछावर कर देता है।

(iv) मानवता का मूल है - सहानुभूंति एवं मानव प्रमे परोपकार की भावना से पूर्ण होना एक सच्चे मनुष्य का धर्म होता है। इस कविता से स्वार्थ त्याग कर परोपकार करने की, सम्पूर्ण विश्व कें आत्म भाव भरने, की मृत्यु के भय को त्याग कर परोपकार करने की, उदार बनने की, धन का लाभ त्यागने की, ईश्वर पर आस्था रख मिलजुल कर आगे बढ़ने की, विध्नों का प्रसन्नता से सामना करने की प्ररेणा मिलती है।

Question 16

Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:—

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिएः-

तू तरूण देश से पूछ, अरे,
गूँजा यह कैसा ध्वंस-राग ?
अंबुधि-अंतस्तल बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग ?
प्राची के प्रांगण-बीच देख,

जल रहा स्वर्ण-युग-अग्नि-ज्वाल।

तू सिंहनाद करं जाग, तपी।

मेरे नगपति ! मेरे विशाल।

-हिमालय-

कवि- रामधारी सिंह दिनकर

(i) 'तरूण देश' का सन्दर्भ स्पष्ट करते हुए लिखिये कि यहाँ किस 'ध्वंस राग' की बात की जा रही है। [2]

(ii) 'जल रहा स्वर्ण-युग-अग्नि-ज्वाल' का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए। [2]

(iii) हिमालय का भारत की सभ्यता और संस्कृति से क्या सम्बन्ध है ? हिमालय को सुरक्षित रखना आज के युग की प्राथमिकता क्यों है ? [3]

(iv) शब्दार्थ दीजिए :-

थ्संहनाद, अंबुधि, ध्वंस, प्राची, सुलगना, स्वर्ण। [3]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ-

(i) अधिकांश छात्रों ने गलत उत्तर लिखा। कुछ छात्र तो प्रश्न के दोनों भाग में भ्रमित रहे। अधिकांश छात्र 'तरूण देश' का संदर्भ स्पष्ट नहीं कर पाये और न ही ये बता पाये कि यहाँ किस 'ध्वंस-राग' की बात की गई है। देश की परिस्थिति के ज्ञान का सर्वथा अभाव दिखाई दिया। प्रश्न को छात्र समझ ही नहीं पाये।

(ii) बहुत कम छात्र इस पंक्ति के भाव को स्पष्ट कर पाये। स्वर्ण युग के ज्ञान का अभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत हुआ। कुछ छात्रों ने प्रयास किया। वे अर्थ स्पष्ट भी कर पाये पर 'जल रहा स्वर्ण-युग अग्नि ज्वाल' का अभिप्राय स्पष्ट करने में असमर्थ रहे।

(iii) इस प्रश्न का उत्तर कुछ मिला-जुला रहा। प्रश्न के प्रथम भाग को कम छात्र ही स्पष्ट का पाये। सभ्यता एंव संस्कृति शब्द से छात्र अनभिज्ञ दिखाई दिए। कुछ छात्रों के उत्तर में हिमालय से सम्बन्धित विस्तृत ज्ञान दिखाई पड़ा। कुछ प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर नहीं दे सके।

(iv) सभी शब्दों के सही अर्थ किसी भी छात्र ने नहीं लिखा। प्राची शब्द का अर्थ बहुत कम छात्रों ने लिखा। अधिकांश ने सुलगना का अर्थ जलना या आग की लपटें लिखा। शब्दार्थ लिखने में वर्त्तनी सम्बन्धित अशुद्धियाँ बहुत पायी गयी।

अध्यापकों के लिए सुझाव-

- कविता पढ़ाते समय उसकी प्रत्येक पंक्ति का संदर्भ अर्थ एंव भाव छात्रों के समक्ष स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- इस प्रकार के क्लिष्ट शब्दों तथा प्रसंगों का कक्षा में अभ्यास तथा पुनरावृत्ति भी अवश्य करवाया जाना चाहिए।
- कविता की व्याख्या व प्रत्येक पंक्ति के शाब्दिक अर्थ तथा निहित भाव दोनों का स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए।
- इस प्रकार की कविता पढ़ाते समय देश की तत्कालीन परिस्थितियों का भी परिचय देना चाहिए।
- उस समय कौन सी समस्याएँ सर उठाये खड़ीं थी तथा किस प्रकार उसमे हम जूझ रहे थे। इसकी जानकारी भी अवश्य देनी चाहिए।
- देश की आन-बान व शान देश की नदियाँ पर्वत व प्राकृतिक धरोहरों के विषय में विस्तार से बताया जाए।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

– शब्दार्थ पर छात्रों का बार-बार ध्यान केन्द्रित कराना चाहिए। शब्दार्थ याद करके लिखने का भी अभ्यास करवाना चाहिए। शब्दार्थ याद होने से अर्थ तथा भावार्थ को अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

अंक योजना–

प्रश्न 16

(i) 'तरूण देश' का तात्पर्य युवाराष्ट्र अर्थात् हाल में स्वतंत्र हुए राष्ट्र से भी है। 'तरूण देश' अर्थात् देश की युवाशक्ति जो किसी भी देश की रीढ़ होती है उन से अंग्रेजों द्वारा देश का विनाश कर देने के राग की बात की जा रही है क्योंकि अंग्रेज हमारे देश पर अत्याचार किये जा रहे हैं और देश के युवा उस विनाश के खिलाफ कुछ आवाज़ नहीं उठा रहे हैं। ऐसा करने के पीछे उनका क्या उद्देश्य है ? कवि उनसे यह जानना चाहते हैं।

यहाँ विघटनकारी तत्त्वों की सक्रियता के 'ध्वंस राग' की बात की जा रही है।

(ii) पूर्व दिशा के आगन में देख जो उंगता हुआ सूर्य स्वर्ण के समान पीली पीली किरण फैलाकर लोगों में जागृति भर देता था। वह किरणें आज आग की लपटों के समान सब कुछ जलती हुई सी प्रतीत हो रही हैं अर्थात् जिस सम्पदा, जिस वैभव के लिए भारत प्रसिद्ध था वह सब नष्ट होता हुआ सा प्रतीत हो रहा है भारत का स्वर्मिन युग नष्ट हो गया है।

(iii) भारत के लिए हिमालय शान है, जान है, रक्षक है, पोषक है, यदि हिमालय न होता तो पश्चिम देशों से आने वाली सर्द हवाएँ भारत को कभी का संकट में डाल सकती थी। इससे बहने वाली नदियाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर धन धान्य से भर कर भारतवासियों को पोषण प्रदान करती है। इसी से बहने वाली नदियों के किनारों पर बसे पवित्र तीर्थ स्थल हमारी संस्कृति के पोषक है। भगवान शिव का कैलाश जो हमारे पुराणें में अंकित है वह यही विराजमान है। यह शत्रुओं से हमारी रक्षा का कवच भी है। यह पर्वतों का राजा हिमालय हम भारतवासियों की आन, बान तथा शान है इसलिए इसे हमारा शत शत नमन है।

(iv) शब्द :-

सिंहनाद - शेर के समान आवाज़

अंबुधि - समुद्र

ध्वंस - विनाश

प्राची - पूर्व दिशा

सुलगना - धीरे-धीरे जलना

स्वर्ण - सोना

<u>विषय जो परीक्षार्थियों के लिए कठिन/अस्पष्ट रहे-</u>

प्रश्न-1 निबन्ध के कई बिन्दु थे। छात्रों ने सभी बिन्दुओं की पर ध्यान नहीं दिया तथा उचित रीति से लिखा भी नहीं।

(i) सिर्फ पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन किया, तुलना भी नहीं की गयाी।

(ii) हास्य सम्बन्धी घटनाएँ बहुत कम पायी गयी।

(iii) कहानी लेखन में मौलिकता का सर्वथा अभाव पाया गया। 'मौलिक' शब्द से विद्यार्थी अनजान दिखे।

(iv) छात्र चित्र समझने में असमर्थ लगे। नारी की स्थिति पर लिखा, पानी के महत्व को जाना या समझा ही नहीं।

प्रश्न-2 (i) विशेष स्थान की यात्रा में 'पर्यटन' शब्द का अर्थ समझने में कठिनाई।

प्रश्न-4 (a) 'निराश' शब्द के स्थान पर 'आशा' शब्द का प्रयोग करने में कठिनाई।

(b) उसका कार्य <u>प्रशंसा के योग्य</u> था।

रेखांकित शब्द के स्थान पर एक शब्द लिखने में कठिनाई।

प्रश्न-5 (ii) यहाँ 'किस कार्यालय' - कार्यालय का नाम बताने में कठिनाई।

प्रश्न-6 (iv) 'गुरू-शिष्य परम्परा' पर छात्रों का विचार अस्पष्ट। उत्तर लिखने में असमर्थ

प्रश्न-7 (iv) विचारात्मक प्रश्न के उत्तर लिखने में छात्रों को कठिनाई हुई। अतः सामाजिक जीवन की मूल्यहीनता नहीं समझ पाये।

प्रश्न-10 (iv) "सिंहासन पर बैठने का अधिकार केवल योग्य और वीर पुरूष" इसे व्याख्या करने में छात्रों को कठिनाई।

प्रश्न-12 "पृष्ठभूमि" शब्द से परिचित न होने के कारण छात्र इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं कर सके। विशेषता भी नहीं बता सके।

प्रश्न-14 कवि कबीरदास की भक्ति धारा को लेकर विद्यार्थी भ्रमित रहे। 'कबीरदास' के स्थान पर 'सूरदास' का परिचय भी लिखा।

प्रश्न-16 (i) 'तरूण देश' तथा 'ध्वंस राग' जैसे शब्दों का अर्थ लिखने में असमर्थ रहे।

(ii) "हिमालय का भारत की सभ्यता और संस्कृति से सम्बन्ध"- परीक्षार्थी इस प्रश्न का उत्तर नहीं लिख पाए। शब्द समझने में कठिनाई।

<u>विद्यार्थियों के लिए सुझाव-</u>

- प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित 15 मिनट का सदुपयोग करें। प्रश्न पत्र को दो बार ध्यानपूर्वक और स्थिरचित्त से पढ़ें।
- प्रश्न को गहराई से समझने का प्रयत्न करें।

- निबन्ध-लेखन का अभ्यास आवश्यक है। लेखन से पूर्व दिए गये विषय ध्यान से पढ़े एंव समझें।
- निबन्ध की एक रूप रेखा बना लें एवं सभी आवश्यक बिन्दुओं का समावेश करें। असंगत व अनावश्यक बातें न लिखें।
- मुहावरों व उक्तियों का यथोचित प्रयोग निबन्ध की भाषा को सुन्दर बनाने के लिए करें।
- निबन्ध के तीनों भागों यथा प्रस्तावना, मुख्य विष्य और उपसंहार का विशेष ध्यान रखें व अनुच्छेद परिवर्तन का खास ख्याल रखें।
- पत्र लेखन में पत्र का प्रारूप, संबोधन, अभिवादन इत्यादि का विशेष अभ्यास करें।
- व्यवहारिक व्याकरण का मौखिक एवं लिखित अभ्यास करें। अपठित गद्यांश का उत्तर अपनी भाषा में लिखने का अभ्यास करें।
- निर्देशानुसार वाक्य परिवर्त्तन करते समय लिंग, वचन, काल आदि में अनावश्यक परिवर्त्तन न करें।
- पाठ्य पुस्तकों के सभी पाठों को ध्यान से पढ़े। मात्र कहानी समझकर नहीं।
- पाठों मे आए विशेष संदर्भों की जानकारी अवश्य प्राप्त करें तथा पाठ का आलोचनात्मक अध्ययन करें।
- पाठ के मुख्य बिन्दुओं को बार-बार लिखकर अभ्यास करें और तर्क सहित उत्तर लिखने का प्रयास करें।
- अपने विचारों की अभिव्यक्ति करना सीखें व शब्दों के उचित प्रयोग पर ध्यान दें।
- वर्त्तनी संबन्धी त्रुटियों पर ध्यान दें। श्रुतलेख के माध्यम से उसे सुधारने का प्रयास करें।
- हस्तलेख को अभ्यास द्वारा सुन्दर बनायें।
- शब्द भंडार की वृद्धि के लिए पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ इत्यादि पढ़ने की आदत डालें।
- स्वध्याय की आदत डालें। समय-समय पर पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़े।
- व्याकरण के नियमों का अनुसरण करें।
- नाटक, एकांकी इत्यादि मंचन में रूचि लें। इससे भी संदर्भ याद रखना सरल हो जाता है।
- हिन्दी साहित्य तथा भाषा सम्बन्धी अन्य गतिविधियों में अवश्य भाग लें।
- चारित्रिक विशेषताएँ लिखने में रूचि रखें और उसका अभ्यास करें।